मई 2006
Rs. 13 /-
चन्दामामा

ग्रीष्मावकाश के लिए
तुम्हारी योजनाएँ क्या हैं?
क्यों नहीं तुम नवम्बर बाल विशेषांक के लिए चित्रकारी और लेखन-कार्य करो और आकर्षक पुरस्कार जीतो?
● मौलिक अप्रकाशित कहानियाँ लिखो (५०० से ७५० शब्दों के बीच)
● अपने शास्त्रों/पावन ग्रंथों के किसी प्रसंग पर चित्र बनाकर रंग भरो। (अपनी प्रविष्टि के साथ कथासार भेजना चाहिये; १० इंच X २० इंच का ड्राइंग पेपर का प्रयोग करो; क्रेयन्स, कलर पेंसिल, वाटर कलर या पोस्टर कलर का प्रयोग कर सकते हो।)
● तुम्हारी प्रविष्टि १३ भाषाओं में से, जिनमें चन्दामामा छपती है, किसी एक में हो सकती है।
● अपनी प्रविष्टियाँ कूपन के साथ ३१ जुलाई से पहले भेजो।
प्रविष्टि कूपन के लिए
जून और जुलाई अंकों को देखो।

चन्दामामा

सम्पुट-५७ मई २००६ सञ्चिका - ५

अंतरंग

विशेष आकर्षण

SUBSCRIPTION

For USA and Canada
Single copy $2
Annual subscription $20

Remittances in favour of Chandmama India Ltd.
to
Subscription Division
CHANDAMAMA INDIA LIMITED
No. 82, Defence Officers Colony
Ekkatuthangal,
Chennai - 600 097
E-mail :
subscription@chandamama.org

चन्दामामा प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता-२

(मार्च २००६)

हमारे हिन्दी संस्करण के पाठकों की ओर से भेजी गई प्रविष्टियों में कोई भी पूर्ण रूप से सही नहीं पाई गई। इसलिए हिन्दी में हमलोग पुरस्कार नहीं दे रहे हैं। अपने पाठकों के लाभार्थ हम पृष्ठ ३९ में प्रश्नोत्तरी-२ के उत्तर प्रकाशित कर रहे हैं। कृपया चन्दामामा की आगामी प्रश्नोत्तरी में भाग लेते रहिये।

© The stories, articles and designs contained in this issue are the exclusive property of the Publishers. Copying or adapting them in any manner/ medium will be dealt with according to law.

संस्थापक
बी. नागिरेड्डी और चक्रपाणि

परिवारों के परिवार का निर्माण

भारत में मई महीना और जून के कुछ सप्ताहों का समय बच्चों के लिए ग्रीष्मावकाश होता है। अधिकांश, खास करके बड़े शहरों में रहनेवाले छात्रों को दादा-दादी से मिलने के लिए माता-पिता अपने जन्म स्थानों पर ले जाते हैं। उन्होंने कितनी उत्सुकता से ९-१० महीनों के लम्बे अन्तराल के बाद घर जाने का इन्तजार किया होगा! बच्चों के लिए अपने मूल की वापसी स्वागत योग्य परिवर्तन होता है।

मान लेते हैं कि किसी असंगत परिस्थितियों के कारण ऐसा अवसर उन्हें नहीं मिलता। बच्चे सारा दिन किसी प्रकार घर पर रह सकते हैं- तो इससे उन्हें 'घर-स्कूल-घर' की दैनिक दिनचर्या से मुक्ति मिल जाती है। घर में बड़ों को उनके दैनिक घरेलू कामों से कुछ राहत देना कैसा रहेगा? जैसे घर को साफ-सुथरा रखना? सामने या पीछे के बाग का रखरखाव करना!

फिर भी जरूरी नहीं कि ऐसी गतिविधि को घर की चहारदीवारी के अन्दर कैद रखा जाये। कॉलोनी की आवश्यकताओं को देखते हुए अपने पड़ोस में तुम एक सामुदायिक जीवन के बारे में सोच सकते हो, जिससे बच्चे एक दूसरे के करीब आयेंगे और परिणामतः भाईचारे के भाव- परिवारों के परिवार का उद्‌भव होगा। सामुदायिक नेतृत्व में व्यावहारिक अनुभव पाने का यह एक अच्छा तरीका हो सकता है।

तुम इस प्रकार अपने माता-पिता के ऋण को, जो उन्होंने अपना समय और प्रयास तुम्हारे लिए लगाया था, वापस करने में, नाम मात्र को ही सही, इस लम्बे अवकाश का सदुपयोग कर सकते हो।

सम्पादक : विश्वम

पाठकों का पन्ना

सचिन बी. गैण्डीवाड

मुझे आप की पत्रिका पसन्द है; मैंने पिछले तीन या चार वर्षों में एक प्रति भी नहीं छोड़ी है। यह पत्रिका बहुत ही मजेदार है। मैं अंग्रेजी और कन्नड़ दोनों भाषाओं में *चन्दामामा* पढ़ता हूँ और दोनों में काफी फर्क देखा है।

मुर्शिदाबाद से तुषार डे

चन्दामामा मेरी प्रिय पत्रिका है। यह प्रति मास मुझे ज्ञान का एक बहुत बड़ा खजाना लाकर देता है। इस पत्रिका से मैंने नैतिक मूल्य सीखा है। मैं *चन्दामामा* की अपनी प्रति कभी छोड़ना नहीं चाहता।

पोरबन्दर, गुजरात से खीमेश एल.थांकी

वर्षों पहले मैं *चन्दामामा* अपने पुस्तकालय में पढ़ा करता था। अब मैं उसी पुस्तकालय में लाइब्रेरियन हूँ। आज भी *चन्दामामा* हमारी लाइब्रेरी में आ रही है और अध्यापक और छात्र बड़े उत्साह से इसे पढ़ते हैं। पुराणों की सुन्दर कहानियों, वेताल कथाओं तथा अन्य कहानियों ने हमारे बच्चों के सामान्य ज्ञान को बहुत बढ़ाया है । हमलोगों ने *चन्दामामा* की सभी प्रतियों को सुरक्षित रखा है। चन्दामामा ने हमेशा एक ऊँचा स्तर बनाये रखा है।

अक्षित आदित्य तिलकराज गुप्ता, यमुनानगर, हरयाणा से

मैं पिछले बीस वर्षों से *चन्दामामा* का बड़ा ही उत्साही पाठक रहा हूँ। मैं बड़े विश्वास के साथ कह सकता हूँ कि *चन्दामामा* बच्चों की एकमात्र पत्रिका है जो समृद्ध भारतीय संस्कृति और परम्परा को इसकी पूरी गरिमा के साथ प्रस्तुत करती है। इसका नया कलेवर नयनाभिराम है। आपके इसके मूल्य में वृद्धि के निर्णय से मेरे जैसे हजारों पाठकों के उत्साह में कोई कमी नहीं आयेगी। हमलोग *चन्दामामा* को प्रोत्साहित करते रहेंगे। यह हमारी उत्कट अभिलाषा है कि *चन्दामामा* हमें सदा सर्वदा प्रकाश दिखाता रहे।

विचित्र स्वार्थ

बेदिरेश्वर नामक गाँव में मालती नामक एक धाय रहा करती थी। प्रसव के दौरान इर्द-गिर्द के गाँवों के सब लोग उसी को बुलाते थे। सबका यह मानना भी था कि माँ और संतान उसके हाथों में सुरक्षित हैं।

एक दिन वह किसी गाँव से प्रसव संबंधी काम पूरा करके लौट रही थी। उसने देखा कि बेदिरेश्वर गाँव की सरहदों पर एक पेड़ के तले कुछ स्त्रियाँ एक पालकी को घेरी हुई हैं। पालकी से थोड़ी ही दूरी पर कहार खड़े हैं। स्त्रियों में से एक स्त्री ने मालती को पहचाना और उससे कहा, ''मालती, हमारे जमींदार की बहू हमारे गाँव का विदुराश्रम देखने आयीं। अभी मात्र सात महीनों की गर्भिणी हैं, पर परिस्थिति को देखते हुए लगता है कि किसी भी क्षण वह शिशु को जन्म दे दे।''

मालती ने पालकी में लेटी जमींदार की बहू की जाँच की और कहा, ''हाँ, किसी भी क्षण ये माँ बन सकती हैं। इन्हें जल्दी मेरे घर ले आइये।'' वह कहारों की सहायता से उसे तुरंत अपने घर ले गयी। थोडे ही समय के बाद बच्चा जन्मा।

जैसे ही यह ख़बर मिली, जमींदार, उनका बेटा और उनके परिवार के कुछ सदस्य वहाँ आये।

मालती ने जमींदार से कहा, ''सरकार, घबराने की कोई बात नहीं। माँ और शिशु सकुशल हैं। परंतु यहाँ वे सुविधाएँ नहीं हैं, जो आपके यहाँ होती हैं।''

जमींदार ने प्रसन्नतापूर्वक सिर हिलाते हुए कहा, ''मैंने तुम्हारे कौशल के बारे में बहुत कुछ सुना था, पर आज स्वयं देख भी लिया। मैं यहाँ तुम्हारे लिए सभी सुविधाओं का प्रबंध कर दूँगा। राजवैद्य आते ही होंगे। वे मेरी बहू और पोते की देखभाल करेंगे।''

मार्कंडेय जोशी

उस दिन से मालती का भाग्य ही बदल गया। उसके घर में सभी सुविधाओं का प्रबंध हुआ। एक सप्ताह के बाद जमींदार ने मालती के पति को बुलवाया और उसे चार एकड़ का खेत भेंट स्वरूप दिया।

जिस दिन जमींदार की बहू मालती के घर से जा रही थी, उस दिन उसने मालती से कहा, ''तुमने मुझे और मेरे शिशु को बचाया। अगर तुम्हें पुत्री जन्मे तो उसे मैं अपनी बहू बनाऊँगी।''

मालती ने हाथ जोड़कर कहा, ''मैं अपना वृत्ति-धर्म निभा रही हूँ। जमींदार ने मेरी काफ़ी सहायता दी। यही मेरे लिए बहुत कुछ है। आपका नाम लेकर सुखी जीवन बिताऊँगी। मैं और कुछ नहीं चाहती।''

मालती की प्रतिष्ठा बढ़ गयी। अब उसका एक भवन है और खेत भी। यों उसका जीवन आराम से गुज़रने लगा। चार सालों के बाद उसकी एक पुत्री भी हुई। मालती ने उसका नाम रागिणी रखा।

समय बड़ी तेज़ी से गुज़रता गया। जमींदार अब बूढ़ा हो गया। उसका बेटा अब जमींदारी संभालने लगा। पोता कल्याण वर्मा बीस साल का युवक हो गया। मालती की बेटी रागिणी की सुंदरता की प्रशंसा सब करने लगे। उस साल बिंदुरेश्वर के ब्रह्मोत्सव पर आये जमींदार के परिवार ने मालती और रागिणी को देखा। कल्याण वर्मा की माँ ने मालती से बडे ही प्यार से बातें कीं। रागिणी को देखते ही उसे अपना वादा याद आया।

कल्याण वर्मा की माँ ने मालती से कहा, ''तुम्हारी बेटी बड़ी ही सुंदर है। मैं आजाद होती, निर्णय खुद ले सकती तो तुम्हारी बेटीको अवश्य ही अपनी बहू बनाती।'' उसकी इन बातों पर मालती हँसकर चुप रह गयी।

कल्याण वर्मा ने माँ की बातें सुन लीं। उसने माँ से पूछकर विषय जाना। फिर जब रागिणी अकेली थी, वह उससे मिला और कहा, ''मैं तुमसे विवाह करने की इच्छा रखता हूँ। माँ की आशा पूरी करने की मेरी प्रबल इच्छा है।''

परंतु रागिणी ने दबे स्वर में कहा, ''आप जमींदार वंशज हैं। एक धाय की बेटी से शादी करना आपके वंश को और इस समाज को सम्मत नहीं होगा। आपके परिवार के सदस्य जमकर

इस प्रस्ताव का विरोध करेंगे। उनका सामना न ही आप कर सकते हैं और न ही मेरे परिवार के सदस्य।''

बिना कुछ बताये कल्याण वर्मा वहाँ से चला गया।

वृद्ध जमींदार को यह बात मालूम हुई। उसने रागिणी की जन्म-कुंडली मँगवाई और ज्योतिषियों से उसका परिशीलन करवाया। मालूम हुआ कि उसकी जन्म-कुंडली के अनुसार वह महारानी व राजमाता भी बन सकती है। यह जानकर वह एकदम चौंक उठा। उसे लगा कि इस विषम परिस्थिति से बचने के लिए कल्याण वर्मा क ा विवाह ही एकमात्र मार्ग है। वह तुरंत किसी योग्य वधू को ढूँढ़ने में लग गया।

परंतु, इतने में एक अप्रत्याशित दुर्घटना घटी। कल्याण वर्मा एक दिन किसी ज़रूरी काम पर राजधानी के बाहर गया। उस समय अकस्मात् घटाएँ घिर आयीं, बिजली कड़कने लगी और ज़ोर की वर्षा होने लगी। उससे थोड़ी ही दूरी पर बिजली गिरी और घोड़े से गिरकर वह बेहोश हो गया। उसे घर पहुँचाया गया। पर, बिजली के गिरने से उसकी दृष्टि जाती रही। वैद्यों ने परीक्षा के उपरांत बता दिया कि ऐसी किसी अप्रत्याशित घटना के बाद ही उसकी दृष्टि लौट सकती है। जमींदार का पूरा परिवार शोक-ग्रस्त हो गया।

इस घटना के दूसरे दिन, वृद्ध जमींदार ने कल्याण वर्मा से कहा, ''पता नहीं, किस मुहूर्त पर तुम्हारी माँ ने कह दिया, लगता है, तुम्हारा

विवाह उस धाय की बेटी से ही होकर रहेगी। ब्रह्मा ने भी शायद यही लिखा। मुझे यह भी मालूम हुआ कि तुम भी उस रागिणी से विवाह करने के पक्ष में हो। इस असहाय स्थिति में तुम्हें एक ऐसी पत्नी की सेवाओं की जरूरत भी है, जो तुम्हारी देखभाल करे, सदा तुम्हारा ख्याल रखे। उसे तुम अपनी पत्नी बनाना चाहते हो तो, हमें कोई आपत्ति नहीं।''

कल्याण वर्मा ने कहा, ''जैसा आप चाहते हैं, वैसा ही होगा।'' मालती को यह समाचार मिला। उसने रागिणी से कहा, ''बेटी, वे जमींदार हो सकते हैं, पर मैं नहीं चाहती कि तुम्हारी शादी वहाँ हो। तुम्हें एक अंधे की पत्नी के स्थान पर देख नहीं सकती। इस शादी के लिए मैं अपनी स्वीकृति नहीं दे सकती।''

माँ की बातों को न मानते हुए रागिणी ने कहा, "हम कमज़ोर हैं। जमींदार की इच्छा को हम ठुकरा देंगे तो हम आफतों में फंस जायेंगे। मैं हृदयपूर्वक इस विवाह के लिए अपनी स्वीकृति देती हूँ।"

जैसे ही खबर मिली, जमींदार का परिवार बडे ही ठाठ-बाट से मालती केघर आया। आवश्यक साडी व गहने लिये जब कल्याण वर्मा की माँ रागिणी के कमरे में आयी तब उसे देखकर वह स्तंभित रह गयी। रागिणी उस समय अपनी आँखों पर पट्टी बांधी हुई थी। कल्याण वर्मा की माँ उससे कुछ पूछे, इसके पहले ही उसने कहा, "जिस लोक को मेरे पतिदेव देख नहीं सकते, उसे मैं भी देखना नहीं चाहती हूँ। मैं जमींदार के वंश में क़दम रखने जा रही हूँ। मैंने देवी गांधारी को अपना आदर्श मान लिया है।" बिना सकपकाये उसने कह दिया।

जितने भी वहाँ आये, उन सबने रागिणी के चरित्र और साहस की प्रशंसा की। वे कहने लगे कि यह निर्णय जमींदार के वंश के स्तर के योग्य है। परंतु, वृद्ध जमींदार मात्र रागिणी के इस निर्णय का अंतरार्थ जानता था। आशीर्वाद देने के बहाने रागिणी को एकांत में बुलवाकर उसने उससे कहा, "रागिणी, तुम बड़ी अक़्लमंद हो। तुम एक साधारण परिवार की कन्या हो। अंधे कल्याण वर्मा की पत्नी की आड में तुम्हें मैंने उसकी नौकरानी बनाना चाहा। पर, तुम आँखों पर पट्टी बांधकर लोक की दृष्टि में पतिव्रता के स्थान पर पहुँच गयी हो। मैं भांप गया हूँ कि तुम पति के समान ही ज़मींदार के वंश की सेवाएँ पाना चाहती हो। मेरी दृष्टि में तुम स्वार्थी

हो। फिर भी तुम इस लोक की दृष्टि में पतिव्रता हो। तुम्हारे इस विचित्र स्वार्थ पर यह लोक कभी भी उँगली उठाने का साहस नहीं करेगा। मैं हृदयपूर्वक तुम्हारा स्वागत करता हूँ।''

रागिणी ने इसके जवाब में कहा, ''भविष्य में जाकर आप को मालूम होगा कि किसका स्वार्थ विचित्र है। आपने मुझे अपनी बहू के रूप में स्वीकार किया, इसके लिए सदा आभारी रहूँगी।''

रागिणी और कल्याण वर्मा का विवाह संपन्न हुआ। दो महीनों के बाद एक दिन घनघोर वर्षा हुई, बिजली कौंधी। उस दिन कल्याण वर्मा भवन के ऊपर एक उच्च आसन पर बैठा हुआ था। पास ही के आम के पेड़ पर बिजली धडाम् से गिरी। चौंककर वह चिल्ला उठा और आसन से नीचे अचेत गिर गया।

जैसे ही यह बात मालूम हुई, ज़मींदार के परिवार के सब सदस्य वहाँ दौडे-दौडे आये। कल्याण वर्मा ने जब आँखें खोलीं तब सामने खडी रागिणी को आश्चर्य-भरे नेत्रों से देखते हुए कहा, ''वाह, मैं अब फिर से देख सकता हूँ। एक बिजली ने मेरी दृष्टि हर ली, तो दूसरी बिजली नेमुझे दृष्टि प्रदान की। रागिणी, एक बात कहूँ। तुम आज उस दिन से भी अधिक सुंदर लग रही हो। सचमुच मैं इतना खुश कभी नहीं था।''

इस पर रागिणी ने मंद मुस्कान के साथ कहा, ''मैं नहीं जानती कि मैं सुंदर हूँ या नहीं, पर आपके हृदय का सौंदर्य तो सदा अद्भुत ही है। जब से आपने मुझे देखा, तब से आप मुझपर अपार प्रेम बरसा रहे हैं, मुझसे विवाह करने के लिए आपके तीव्र प्रयास कितने ही सराहनीय हैं। मैं आपका ऋण कभी चुका नहीं सकती।''

कल्याण वर्मा ने बड़े ही प्यार से उसे अपने आलिंगन में ले लिया। सबको यह विश्वास हो गया कि रागिणी के पातिव्रत्य धर्म के कारण ही कल्याण वर्मा को पुनः दृष्टि मिली। सबके सब मानने लगे कि रागिणी, एक प्रतिष्ठित और आदरणीय स्त्री है, जिसके आगमन से जमींदार का वंश इतोधिक गौरवान्वित हुआ।

कुत्ते का दोस्त

रामेश और कामेश पड़ोसी किसान हैं। गाँव में लोग रामेश को शब्दों का मांत्रिक कहते हैं। उसकी हर बात में विलक्षणता होती है। कामेश की बड़ी इच्छा है कि मैं भी शब्दों का मांत्रिक कहलाऊँ, अपनी बातों में विलक्षणता लाऊँ और सबकी प्रशंसा पाऊँ। कई बार उसने इस दिशा में प्रयत्न की लेकिन उसने जब-जब इस दिशा में प्रयत्न किये, तब-तब वह रामेश के हाथों हारता ही रहा।

एक बार कामेश के घर के आंगन में बैठकर गाँव के कुछ लोग इधर-उधर की बातें कर रहे थे। उनमें रामेश भी था। उस समय कामेश को गली का एक कुत्ता दिखायी पड़ा, जो उसके दरवाज़े तक आकर रुक गया। कुत्ते को देखते ही कामेश ने कहा, "रामेश, लगता है, तुमसे मिलने कोई आये हैं? देखो तो सही।"

वहाँ उपस्थित सब लोग हँस पड़े। रामेश उठा और दरवाज़े तक गया। कुत्ता भौं-भौं करता हुआ चला गया।

"वे कौन हैं? चिल्लाते हुए क्यों चले गये?" कामेश ने पूछा।

"मैं नहीं जानता, वे कौन हैं। कह रहे थे, वे तुझसे मिलने आये। तुम्हारे बदले मैं गया तो बस, चिल्लाते हुए चले गये," रामेश ने कहा।

इसे सुनकर वहाँ उपस्थित लोग जोर-जोर से हँसने लगे, लेकिन बेचारा कामेश का चेहरा फीका पड़ गया।

-श्री रामकमल

भयंकर घाटी

9

(राजगुरु के साथ आये हुए सैनिकों ने ब्राह्मदण्डी के लिए सारी गुफ़ा छान डाली। आखिर उनको कालभैरव की मूर्ति के नीचे एक गुप्त मार्ग दिखाई दिया। उसे डराकर बाहर आने को मज़बूर करने के लिए मार्ग के द्वार पर राजगुरु ने सूखी लकड़ियाँ इकट्ठी करवाईं, उनपर तेल डलवाकर आग लगवा दी। बाद मेंः-)

तेल से भीगी लकड़ियों और पत्तों में आग लगा दी गई। थोड़ी देर में बड़ी बड़ी लपटें गुप्त मार्ग में जलने लगीं। देखते देखते काला धुँआ सारी गुफ़ा में छा गया। राजगुरु, सेनापति, सैनिक उस धुएँ से गुफ़ा से बाहर भाग गये।

''गुरु जी, जैसा कि आपने कहा था, मान्त्रिक इसी मार्ग में कहीं छुपा हुआ होगा। वह ज़रूर इस आग में जल-भुनकर रहेगा।'' सेनापति ने कहा।

राजगुरु ने गुफ़ा में फैलते हुए धुँए को देखकर कहा, ''वह इतनी आसानी से मरनेवाला नहीं है। ज़रूर यह मार्ग कहीं पहुँचता होगा। और सभी मार्गों की उसे जानकारी होगी। फिर भी वह कहीं न कहीं पहाड़ पर निकलेगा। सैनिकों को जगह जगह खड़ा करो और उनको आज्ञा दोकि ज्योंही उसका कहीं सिर दिखाई दे, उसे पकड़ लें।''

राजगुरु जब यों बात कर रहा था, तो ब्राह्मदण्डी मान्त्रिक दागोंवाले शेर की गुफ़ा के पीछे जाकर अपने शिष्य को बुला रहा था। उसने अपना जादू

का डँडा कई बार पत्थर पर मारा, परन्तु उसपर तो गर्डर पड़ा था। उसे मार्ग न मिला। वह बहुत देर तक वहीं पर चीखता-चिल्लाता रहा।

ब्राह्मदण्डी के कान बड़े तेज़ थे। वह जान गया कि गुफ़ा में उसका शिष्य और केशव धीमे धीमे बातें कर रहे हैं। वह यह भी जान गया कि उन्होंने उसकी आवाज़ सुन ली थी, पर वे उसे गुफ़ा में आने नहीं दे रहे थे। उसे अपने शिष्य जयमल्ल की नीयत पर शक हो गया और यह समझ गया कि वह जान-बूझ कर मुझे खतरे में डालना-चाहता है।

'हूँ...तो तुम्हारी यह चाल है! मुझे ब्रह्मापुर के सैनिकों के हाथ में डालकर तुम भयंकर घाटी की अपार, अमूल्य सम्पदा की चोरी करना चाहते हो? तुम क्या जानोगे मेरा प्रभाव!' सोचकर जादू के डँडे को पत्थर पर मारकर वह चिल्लाया, "अरे विश्वासघाती शिष्य! तुम समझ रहे हो कि मैं नहीं जानता कि तुम उस गड़रिये लड़के के साथ गुफ़ा में हो। मैं अपनी मन्त्रशक्ति से तुम दोनों को भस्म कर दूँगा...नहीं तो जल्दी पत्थर सरकाओ। अच्छा न होगा।"

उसका चिल्लाना सुनकर केशव और जयमल्ल चौंक पड़े।

जयमल्ल फिर सम्भला, उसने कहा, "केशव, इस दुष्ट से हमें कोई आपत्ति नहीं आ सकती, ब्रह्मापुर के सैनिकों के साथ एक आदमी आया है, जिसने उसकी मन्त्रशक्ति हर ली है। उसे सैनिक अवश्य पकड़ लेंगे। ब्राह्मदण्डी जान गया है कि हम यहाँ छुपे हुए हैं। इसलिए हमसे बदला लेने के लिए वह हमें सैनिकों के हाथ पकड़वा देगा। अब हमें यहाँ से भागना होगा।"

जयमल्ल की बात केशव को जँची। पर उसने जयमल्ल से पूछा, "जब चारों ओर से सैनिक हमें ढूँढ़ रहे हैं तो हम कैसे भाग सकते हैं?"

यकायक ब्राह्मदण्डी का खाँसना सुनाई पड़ा। फिर, "अरे बाप रे बाप, मेरे उग्रभैरव को उसने नींव से ही उखाड़कर फेंक दिया है। यह कोई मुझसे भी बड़ा मांत्रिक लगता है। इसने कालभैरव का ही मुँह बन्द कर दिया और अब उसे खंडित भी कर दिया। यह धुँआ क्या है? इससे मुझे बचना होगा। अरे मैं मरा! मुझे यहाँ से शीघ्र ही भागना होगा। लगता है मैं सैनिकों के हाथ ज़रूर पकड़ा

जाऊँगा और बहुत बुरी तरह सताया जाऊँगा। हे कालभैरव!''

उसका ज़ोर ज़ोर से यह चिल्लाना केशव और जयमल्ल ने सुना।

''सैनिकों ने गुप्त मार्ग में कोई ऐसी चीज़ रख दी है कि वे ब्राह्मदण्डी को बिल में से चूहे की तरह खदेड़ रहे हैं।'' जयमल्ल ने कहा।

जयमल्ल यद्यपि बहुत धीमे बोल रहा था, मांत्रिक ने फिर भी उनकी बातें सुन लीं।

''अरे धोखेबाज शिष्य, तुम सोच रहे हो कि मैं तुम्हारी बातें सुन नहीं रहा हूँ।'' ब्राह्मदण्डी जोर से गरजा, फिर रह रहकर खाँसने लगा।

''इस खोह से पहाड़ पर जाने का रास्ता मैं जानता हूँ। अगर उधर गया तो सैनिक मुझे अवश्य पकड़ लेंगे। यहाँ धुँए में घुट घुँटकर मरने से वही अच्छा है। परन्तु मैं सैनिकों को बताऊँगा कि तुम कहाँ छुपे हुए हो। तुम्हारी बोटी-बोटी उनसे कटवा दूँगा।'' उसने कहा।

तुरंत कुछ ऐसी आहट सुनाई दी, जैसे ब्राह्मदण्डी मान्त्रिक गुफ़ा के पिछले भाग से कहीं जा रहा हो। जयमल्ल को डर लगा कि जो कुछ उसने कहा है, वह ज़रूर करके रहेगा।

यदि वह सैनिकों द्वारा पकड़ा गया तो वह हमें भी पकड़वा देगा और तब पता नहीं हमारी क्या दुर्गति होगी!

यदि वह सैनिकों से बच निकला तब भी क्या सैनिकों से वह खुद बच निकल पायेगा। वह इसी उधेड़बुन में था कि क्या किया जाये। सैनिकों

और मान्त्रिक दोनों से बच निकलना आसान नहीं था।

उसने केशव को जहाँ वह था, रहने को कहा और स्वयं गुफ़ा के द्वार पर बाहर झाँककर देखा। उसे दूर एक चट्टान पर एक सैनिक खड़ा दिखाई दिया। वह गुफ़ा की ओर न देखकर कहीं और देख रहा था।

जयमल्ल झट गुफ़ा के अन्दर गया, ''केशव, यदि हमें भागना है, तो यही अच्छा मौका है। ब्राह्मदण्डी जाकर बतायेगा कि हम यहाँ छुपे हुए हैं। हमें जल्दी यहाँ से निकल जाना चाहिये।''

केशव उठकर जयमल्ल के पास गुफ़ा के द्वार पर आया। इतने में दूरी पर उसे कुछ शोर सुनाई दिया। ब्राह्मदण्डी की आवाज गूँज रही थी, सैनिक

शोर कर रहे थे। केशव और जयमल्ल क्षण भर के लिए निश्चेष्ट हो गये। वे सोच ही रहे थे कि क्या किया जाये कि एक बूढ़ा पत्थरों के पीछे से तलवार पकड़े हुए जल्दी-जल्दी आया। गुफ़ा के सामने शेर को खड़ा पा, वह सहसा रुका।

"यह देखो तुम्हारे पिता।" जयमल्ल ने कहा। केशव ने चकित हो पिता की ओर देखा।

जयमल्ल ने हाथ हिलाते हुए कहा, "शेर तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ेगा। चले आओ।" केशव के बूढ़े बाप ने एक बार चारों ओर देखा। फिर पत्थरों के पीछे से धीमे-धीमे आया।

दूरी पर तब तक ब्राह्मदण्डी जोर-जोर से मन्त्रपाठ कर रहा था, उसका मन्त्रपाठ सहसा रुक गया। उसके सामने राजगुरु था। कमण्डल में से पानी निकालकर उसने छिड़का।

उसे देखते ही मान्त्रिक का मुख बन्द हो गया, "हे, कालभैरव, तुम्हीं मेरी रक्षा करो।" ब्राह्मदण्डी जहाँ था वहीं लुढ़क कर ढेर हो गया।

"कालभैरव ही, निस्सहाय हो, दो टुकड़े हो गुफ़ा में पड़ा हुआ है। तुम्हारा नाम क्या है, मान्त्रिक शिरोमणि?" कहता राजगुरु मुस्कराता मुस्कराता ब्राह्मदण्डी के पास आया।

राजगुरु और उसके पीछे हथियार लिये सैनिकों को देखते ही ब्राह्मदण्डी भय के कारण काँपने लगा। कुछ देर तक उसका मुख न खुला, आखिर बहुत कोशिश करके उसने कहा, "महाराज, मेरा नाम ब्राह्मदण्डी मान्त्रिक है।"

"मैंने सोचा था कि तुम बहुत बड़े मान्त्रिक हो। पर तुम इतने बुद्धिहीन हो कि तुम यह भी नहीं जानते कि राजा कौन है और राजगुरु कौन

है।'' कहते हुए राजगुरु ने मान्त्रिक को शिखा पकड़कर ऊपर उठाया।

''महामहिम राजगुरु ही मेरी रक्षा करें। मैं आपके दासों का दास हूँ।'' कहता ब्राह्मदण्डी गिड़गिड़ाने लगा।

''तुमने क्यों ब्रह्मापुर के सेनापति को जंगल में मरवाया था?'' शिखा से उसको झकझोरते हुए राजगुरु ने पूछा।

''राजगुरु, सेनापति को मैंने नहीं मारा था। मेरे शिष्य ने मारा था। वह गुरुद्रोही है। मैंने उसे बहुत मना किया, पर उसने सेनापति की हत्या कर ही दी।''

शिष्य का नाम सुनते ही राजगुरु ने उसकी शिखा छोड़ दी, ''अरे हाँ, हम तो उसकी बात ही भूल गये थे। तुम्हारे दोनों शिष्य कहाँ हैं? बताओ।'' उसने आँखें लाल करते हुए पूछा।

''राजगुरु, उनमें से एक ही मेरा शिष्य है। दूसरा जंगल में पशु चरानेवाला मूर्ख है। उन दोनों ने मिलकर, ऐसा कोई पाप नहीं है, जो नहीं किया हो।'' ब्राह्मदण्डी मान्त्रिक ने कहा।

''मैंने यह पूछा था कि वे कहाँ छुपे हुए हैं और तुम उनके कारनामों के बारे में बता रहे हो। मैं जानता हूँ कि उन सब कारनामों की जिम्मेवारी गुरु पर है। तुमने ही उससे सब कारनामे करवाये होंगे। उन्होंने जो कुछ किया, तुम्हारी प्रेरणा और तुम्हारे आदेश से ही किया होगा। इसलिए उनकी करतूतों की जिम्मेवारी भी तुम्हीं पर होगी। फिर भी, कहाँ हैं वे?'' राजगुरु ने धमकाया।

''राजगुरु, वे दोनों विश्वासघाती, शेर की गुफ़ा में छुपे हुए हैं। यदि तुरंत उनको न पकड़ा गया, तो वे भयंकर घाटी में चले जायेंगे। मेरे गधे शिष्य, जयमल्ल को उस भयंकर घाटी के बारे में सब कुछ मालूम है। उसने छुपे छुपे, केशव ने कालभैरव के प्रभाव में जो कुछ कहा था, सब सुना है।'' ब्राह्मदण्डी ने कहा।

भयंकर घाटी का नाम सुनते ही राजगुरु को आश्चर्य हुआ। उसने पहले कभी यह नाम न सुना था। वह जान गया कि मान्त्रिक का इस पहाड़ पर रहना, कालभैरव की उपासना करना, सेनापति की हत्या करना, इन सब के पीछे भयंकर घाटी की कहानी ही मालूम होती है।

राजगुरु ने यह सोचकर साथ के सैनिकों से

मान्त्रिक के बताये हुए चिह्नों के आधार पर दागोंवाले शेर की गुफ़ा में छुपे हुए जयमल्ल और केशव को पकड़कर लाने के लिए कहा।

सैनिक उस तरफ़ भागे। उनको बूढ़े के साथ केशव और जयमल्ल जाते हुए दिखाई दिये। सैनिक ऊपर की चट्टान पर खड़े होकर चिल्लाये, "अरे बूढ़े, उन्हें कहाँ ले जा रहे हो?"

यह सुनते ही केशव का बूढ़ा पिता बिना झिझके चिल्लाया, "मैं इन दुष्टों को कहीं नहीं ले जा रहा हूँ। राजगुरु के पास पगडण्डी से ला रहा हूँ। तुम शायद मेरा इनाम हथियाने की कोशिश में हो, खबरदार! तुम अपने रास्ते चले जाओ।

"मरने की उम्र है, पर तब भी धन के लिए इतना लालच है।" सोचते सोचते सैनिक पीछे मुड़कर राजगुरु के पास भागे - भागे गये।

राजगुरु यद्यपि भयंकर घाटी के बारे में जानकारी इकट्ठा करना चाहता था तो भी उसने सोचा कि शिष्यों के मिलने पर ही, इस बारे में ब्राह्मदण्डी से पूछताछ करना अच्छा होगा, उनके सामने वह झूठ न बोल सकेगा।

राजगुरु ने सबसे पहले मान्त्रिक का घमण्ड चूर करने की ठानी।
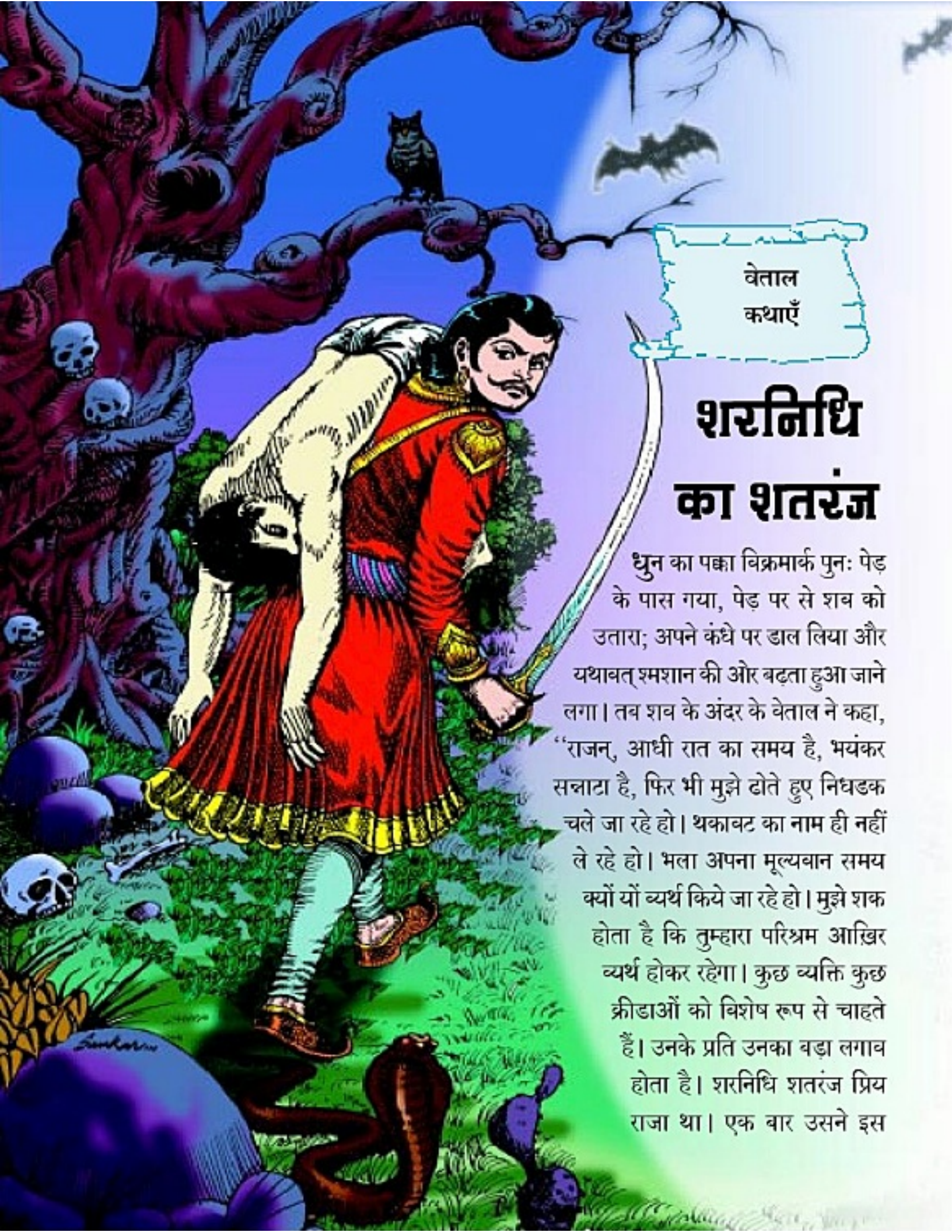
उसने सेनापति को बुलाकर कहा, "इस ब्राह्मदण्डी के हाथ पैर बाँधकर जँगली सूअर की तरह बाँस से लटका दो और नगर के द्वार तक ढोकर भिजवा दो। एक सैनिक को पहले भिजवाकर ढिंढोरा पिटवा दो कि मान्त्रिक के पकड़े जाने के कारण आज का दिन त्योहार घोषित कर दिया जाये। फिर भी दो सैनिकों को इसकी गुफ़ा पर पहरे पर छोड़ दो।"

राजगुरु की आज्ञा सुनते ही सैनिकों ने ब्राह्मदण्डी मान्त्रिक के हाथ पैर बाँध दिये। फिर वे एक मोटी-सी लकड़ी लाये। उसे उस पर लटका दिया, दोनों छोरों पर दो-दो सैनिक उठाकर पहाड़ से नीचे उतरने लगे। ब्राह्मदण्डी लकड़ी के इधर-उधर हिलने के साथ विलाप करता जाता था। "ओ उन्मत्त भैरव, उपासकों के वट वृक्ष, कितना अपमान करवा रहे हो मेरा!"

राजगुरु हँसता पहाड़ की तलहटी पर पेड़ से बँधे अपने घोड़े की ओर चला। ***(अभी है)***
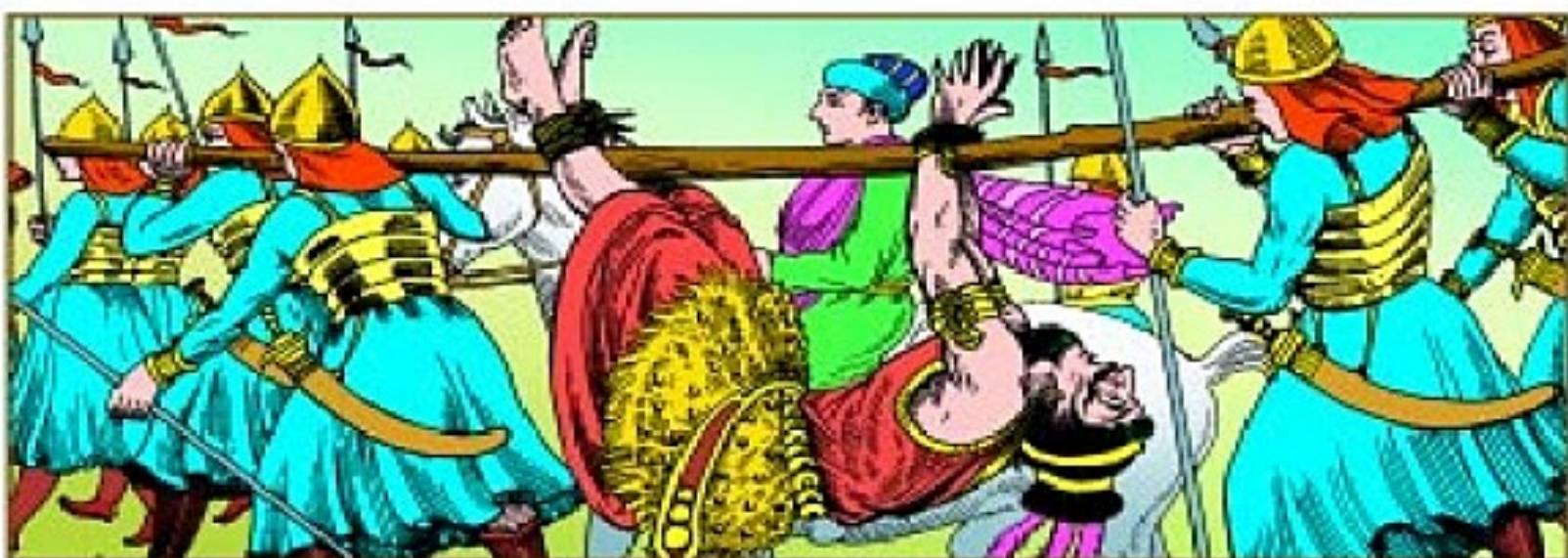
बेताल कथाएँ

पेशे का प्रेमी

धुन का पक्का विक्रमार्क पुनः पेड़ के पास गया। पेड़ पर से शव को उतारा और अपने कंधे पर डाल लिया। फिर वह श्मशान की ओर बढ़ता हुआ जाने लगा। तब शव के अंदर के बेताल ने कहा, ''राजन्, तुमसे हर बार कहता आ रहा हूँ कि जो काम तुम कर रहे हो, वह तुम्हें शोभा नहीं देता। यह क्यों भूल जाते हो कि तुम एक राजा हो और राजा का काम श्मशान में नहीं, राज्य में होना चाहिये। आम जनता के दुख दर्द को जानना चाहिये और उनकी यथासंभव सहायता करनी चाहिये। मेरी समझ में नहीं आता कि अपने कर्तव्य को भुलाकर तुम यह कठोर परिश्रम क्यों कर रहे

हो। परंतु, कभी-कभी कार्य को साधने के बाद, जिस फल की आशा की जाती है, उसके बिपरीत होता है। उदाहरणस्वरूप तुम्हें चक्रि नामक एक युवक की कहानी सुनाऊँगा। थकावट दूर करते हुए उसकी कहानी सुनना।'' फिर बेताल चक्रि की कहानी सुनाने लगाः

भोगपुर में श्रीकांत नामक रत्नों का एक व्यापारी रहा करता था। उसके तीन बेटे थे। दोनों बड़े बेटे पिता के व्यापार में सहायता पहुँचाते रहते थे । तीसरा बेटा चक्रि साहित्य में विशेष अभिरुचि रखता था। व्यापार में उसकी कोई दिलचस्पी नहीं थी।

उस शहर के प्रमुख पंडित ब्रह्मवर्मा के घर में हर दिन शाम को काव्य गोष्ठी का आयोजन होता था। उसमें पुरुष और स्त्रियाँ भाग लेते थे और कितने ही विषयों पर विशद रूप से चर्चाएँ करते रहते थे। चक्रि भी अक़्सर उन चर्चाओं में सक्रिय रूप से भाग लेता था। काव्यों का वह भली-भांति अध्ययन करता था और समझ भी लेता था। सब लोग उसकी विद्वता की प्रशंसा भी करते थे। एक दिन, विमला नामक एक युवती ने उसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की। उस दिन से चक्रि बिमला से प्रेम करने लगा।

विमला उस शहर की नहीं थी। उसका पिता बीरांग मोहपुर में प्रमुख ब्यापारी था। जब वह बीमार हुआ तब वैद्यों ने उसे सलाह दी कि भोगपुर में रहने से उसकी तबीयत सुधर सकती है। अपनी बेटी के साथ वह वहाँ आया और अपने एक रिश्तेदार के घर में रहने लगा। विमला, हर दिन चक्रि के साथ ब्रह्मवर्मा के घर में काव्यों को लेकर चर्चाएँ करती रहती थी। दोनों कभी-कभी वैयक्तिक बातें भी करते रहते थे।

विमला ने, एक दिन चक्रि से कहा, ''मेरे पिताजी का स्वास्थ्य अब बिलकुल ठीक है। कल ही हम मोहपुर लौटनेवाले हैं।'' यह सुनते ही वह चिंतित हो उठा और कहने लगा, ''तुम्हारे बिना मैं जी नहीं सकता। तुम्हारी स्वीकृति हो तो हम दोनों शादी कर लेंगे।''

बिमला शरमाती हुई बोली, ''तुम एक प्रमुख रत्न व्यापारी के पुत्र हो। मेरे पिता इस विवाह को अवश्य स्वीकार करेंगे। बिवाह का प्रस्ताव लेकर तुम अपने बड़ों के साथ मोहपुर आओ। वहीं इसका निर्णय होगा।''

चक्रि यह बात पिता से बताना चाहता था, परंतु जब उसके दोनों भाइयों की शादी नहीं हुई, तब भला यह कैसे कहे। वह संकोच में पड़ गया।

चक्रि का पिता अचानक किसी काम पर ध्रुवपुर गया, जो बहुत दूर था। वहाँ जयगुप्त नामक एक बाल्य मित्र से उसकी मुलाक़ात हुई। वह चक्रि के पिता को अपने घर ले गया।

जयगुप्त करोड़पति था। उसकी तीन बेटियाँ थीं। तीनों ने बहुत ही अच्छी तरह से श्री कान्त का आदर-सत्कार किया। श्रीकांत उनकी सुंदरता, विनय व व्यवहार शैली को देखकर बहुत ही प्रसन्न हुआ। उसने जयगुप्त से यह कहा भी।

जयगुप्त ने मुस्कुराते हुए कहा, "मैंने तुम्हारे तीनों बेटों को देखा नहीं। परंतु तुम्हें देखकर अंदाजा लगा सकता हूँ कि वे भी अवश्य ही तुम्हारी ही तरह योग्य व दक्ष होंगे। उन तीनों को अपना दामाद बनाने की मेरी इच्छा है। तुमने तो मेरी बेटियों को देख लिया और उनकी प्रशंसा भी की। क्या उन्हें अपनी बहुएँ बनाने को तैयार हो?"

श्रीकांत ने सकपकाते हुए कहा, "मेरी पत्नी कहा करती है कि बहनें देवरानियाँ हों तो मिल-जुलकर रहेंगी। तुम्हारी बेटियाँ मेरी बहुएँ होंगी तो यह मेरा भाग्य होगा। परंतु, उन्हें पहले एक - दूसरे को देखना होगा और पसंद भी करना होगा न?"

जयगुप्त ने फ़ौरन कहा, "तुम्हारा शहर मेरे शहर से बहुत दूर है। उनका एक-दूसरे को देखना और फिर कभी विवाह इसमें बहुत समय लगेगा।

जहाँ तक मेरी बेटियों की बात है, वे वही करेंगी, जो मैं कहूँगा। समझता हूँ कि तुम्हारे बेटों के विषय में भी यही सच है। उनकी अस्वीकृति की स्थिति में ही उन्हें एक-दूसरे को देखना होगा।"

श्रीकांत के लिए यह चुनौती थी। घर लौटते ही उसने अपने तीनों बेटों को बुलाया और जो हुआ, उसका सविस्तार विवरण दिया। फिर कहा, "जयगुप्त मेरा बाल्य मित्र है। उसकी बेटियाँ सुंदर और विनम्र हैं। बहुत ही विनयी हैं। उन्हें देखे बिना ही तुम इस विवाह के लिए मान जाओगे तो मैं जयगुप्त के सामने सिर उठाकर खड़ा हो सकता हूँ।"

बड़े दोनों बेटों ने पिता के इस प्रस्ताव को मान लिया। पर चक्रि ने जैसे ही विमला के बारे में बताया तो क्रोध से पिता का चेहरा तमतमा उठा।

उसने कहा, ''वह बीरंग हमारा कट्टर शत्रु है। तुम बिमला को भूल जाओ।''

चक्रि ने नहीं माना। तब श्रीकांत ने क्रोध-भरे स्वर में कहा, ''मेरे मित्र की पुत्री से विवाह करने से इनकार कर रहे हो और मेरे शत्रु की पुत्री से विवाह पर तुले हुए हो। अगर तुम्हारा यही निर्णय है तो इसी क्षण घर से निकल जाओ। तुम्हारे लिए मेरे घर के दरवाज़े हमेशा के लिए बंद हैं।''

चक्रि उसी क्षण घर से चला गया और मोहपुर जाकर बिमला से सारी बातें बतायीं।

बिमला डरती हुई बोली, ''अब तक मुझे मालूम ही नहीं था कि तुम्हारे पिता और मेरे पिता कट्टर शत्रु हैं। तब तो मेरे पिता भी इस विवाह के लिए अपनी स्वीकृति नहीं देंगे।''

''तुम्हारे लिए मैं घर छोड़कर आया हूँ। तुम भी घर छोड़कर चली आओ। विवाह करके सुखी जीवन बिताएँगे,'' चक्रि ने कहा।

''तुम्हें तुम्हारे पिता ने घर से निकाल दिया। अब तुम्हारे पास फूटी कौड़ी भी नहीं है। शादी कर लेंगे तो कैसे सुखी रह सकते हैं। जब तक अपने को योग्य व धनी साबित नहीं करोगे तब तक तुमसे शादी करने का सवाल ही नहीं उठता।'' उसने स्पष्ट शब्दों में कह दिया।

चक्रि को लगा कि विमला की बातों में औचित्य है। उस दिन से वह धन कमाने के प्रयत्नों में जी-जान से लग गया। लेकिन तत्काल पेट भरना भी उसके लिए मुश्किल था।

ऐसी परिस्थितियों में, वज्रपुर के एक निवासी ने चक्रि से कहा, ''इस गाँव में कपड़े धोनेवाले नहीं हैं। तुम अगर मेरे घर के कपड़े धोओगे तो दोनों वक़्त खाने का बंदोबस्त करूँगा। और हर महीने पाँच अशर्फियाँ दूँगा।''

कोई और चारा नहीं था। चक्रि ने उसका कहा मान लिया और नौकरी पर लग गया। अड़ोस-पड़ोस के लोग भी उसे धोने के लिए कपड़े देने लगे। क्रमशः उसकी मासिक आय बढ़ने लगी।

एक दिन उसके मालिक के घर एक साधु आया। चक्रि को उसके काषाय वस्त्र धोने पड़े। साधु ने चक्रि को बुलाकर कहा, ''तुमने मेरे कपड़े धोये, पर गंदगी जैसी की तैसी है। अगर यही सिलसिला जारी रहा तो तुम अपने पेशे में कैसे आगे बढ़ सकते हो?''

चक्रि की आँखों में आँसू उमड़ आये। उसने

साधु को अपनी प्रेम-कहानी सुनायी और कहा, ''लाचार होकर मैं यह काम कर रहा हूँ। कपड़े धोना मेरा पेशा नहीं है।''

साधु को उसपर दया आ गयी। उसने कहा, ''जिस पेशे में तुम आगे बढ़ना चाहते हो, उस पेशे से प्रेम करना चाहिये। अन्यथा जीवन में तुम्हारी प्रगति कदापि नहीं होगी।''

''पेशे से प्रेम। यह कैसे?'' आश्चर्य-भरे स्वर में उसने पूछा। ''पेशा अगर तुम्हें इज़्ज़त बख्शे तो वह पेशे का बडप्पन है। पेशे की इज़्ज़त अगर तुम करोगे तो वह तुम्हारा बडप्पन है। पेशे की बारीकियाँ सीखो और नयी पद्धतियाँ अपनाओ।'' साधु ने कहा।

साधु की इन बातों ने चक्रि पर मंत्र की तरह काम किया। साधु के चले जाने के बाद, वह एक दूरस्थ गाँव में गया और वहाँ अपने पेशे से संबंधित बारीकियाँ सीखीं। फिर वज्रपुर लौट कर कपड़ा धोने के क्षेत्र में नयी पद्धतियों को अमल में लाने लगा। इस वजह से जो कपड़े वह धोता था, वे एकदम सफ़ेद होते थे। रंग भरे कपड़े नये दिखते थे। पुराने कपड़े अगर रंगहीन हो जाते तो वह उनपर रंग चढ़ाता था। नये कपडों का रंग अगर पसंद न आता हो तो वह उस रंग को बदल भी देता था। वज्रपुर के निवासियों ने पहचाना कि यह एक बड़ी कला है और वे उसका आदर भी करने लगे। चक्रि को अब इस पेशे से पर्याप्त आमदनी भी मिलने लगी। साल ही के अंदर उसने नाम कमाया, साथ ही बहुत धन भी।
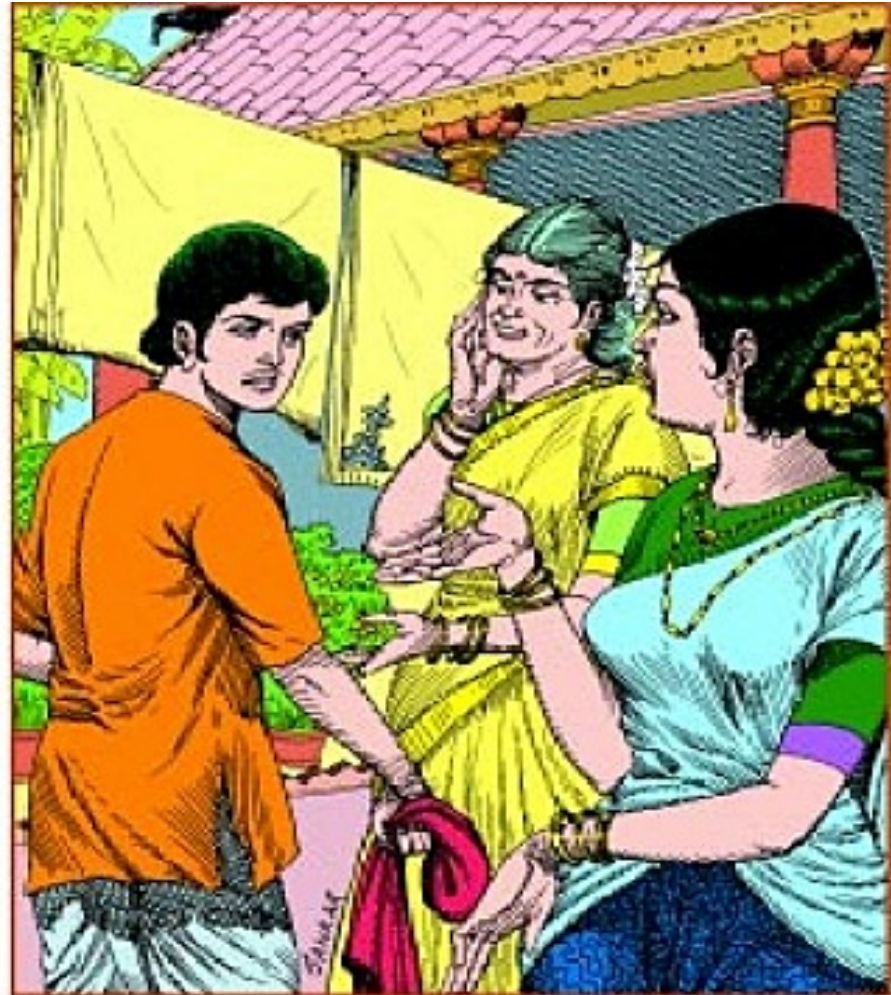
इस बीच, चक्रि का बाप ध्रुवपुर गया और जयगुप्त से चक्रि के विषय में सविस्तार बताया। इसपर जयगुप्त ने कहा, ''मुझे इस बात का दुख है कि मेरे कारण बाप-बेटे को अलग होना पड़ा। विमला के पिता वीरांग को मुझसे कितने ही लाभ पहुँचे। वह मेरी बात को इनकार ही नहीं कर सकता। इस विवाह से तुम दोनों परिवारों के बीच का मन-मुटाव भी दूर हो जायेगा।''

यों, जयगुप्त के प्रयासों से श्रीकांत और वीरांग दोस्त बने। तीनों सपरिवार वज्रपुर गये और चक्रि से मिले। चक्रि ने अपनी पूरी कहानी उन्हें सुनायी। तब उसकी माँ ने उससे कहा, ''कड़ी मेहनत करके तुम इतने बड़े हो पाये, पर हम तुम्हारे इस पेशे से क़तई खुश नहीं हैं। यह भूलना मत कि तुम रत्नों के व्यापारी के बेटे हो।'' पास ही खड़ी

विमला चक्रि से कहने लगी, ''मेहनत करके जीवन निर्वाह करने का यह पेशा मुझे भी पसंद नहीं। अगर यह पेशा नहीं छोड़ा तो मैं तुमसे शादी नहीं करूँगी। निर्णय कर लो कि तुम मुझे चाहते हो या अपने पेशे को।''

चक्रि नाराज़ी से बोला, ''तो मेरा भी निर्णय सुन लो। उसी कन्या से मैं विवाह करूँगा, जो मेरे साथ मेरे पेशे का भी आदर करेगी।''

तब जयगुप्त ने उसके कंधे पर हाथ रखते हुए कहा, ''बेटा, मेरी तीसरी बेटी तुम्हारे साथ कपड़े धोने के लिए तैयार है। क्या उससे शादी करोगे?''

चक्रि ने तुरंत जयगुप्त के पाँव छूते हुए कहा, ''आपकी पुत्री से विवाह करना अपना भाग्य समझता हूँ।''

वेताल ने कहानी पूरी की और राजा विक्रमार्क से पूछा, ''राजन्, चक्रि ने अपनी प्रेयसी विमला के लिए, प्रमुख रत्न व्यापारी पिता व परिवार को छोड़कर नाना कष्ट सहे। साधु के हितबोध के कारण उसने कपड़ों को धोने का पेशा अपनाया और उस पेशे से पर्याप्त धन भी कमाया। परंतु विमला को उसका पेशा हेय लगा। विमला की इच्छा के अनुसार ही वह पेशा छोड़ पिता के साथ रत्नों का व्यापारी बनकर आराम से ज़िन्दगी गुज़ार सकता था। उसका निर्णय तो विवेकहीन लगता है। मेरे इन संदेहों के समाधान जानते हुए भी चुप रहोगे तो तुम्हारे सिर के टुकड़े-टुकड़े हो जायेंगे।''

विक्रमार्क ने कहा, ''कुछ ऐसे पेशे होते हैं, जो आदरणीय नहीं लगते, पर जो व्यक्ति उन पेशों को अपनाते हैं और अपनी प्रतिभा से उन्हें आदरणीय बनाते हैं, वे विशिष्ट व्यक्ति कहलाते हैं। साधु के हितबोध से चक्रि ने यह जाना और वह उस पेशे का प्रेमी बना। उसने साबित कर दिखाया कि कपड़ों को धोना कोई हेय पेशा नहीं है। परंतु, विमला इस तथ्य को जान नहीं सकी और उसके पेशे को हेय मान बैठी। इसी वजह से चक्रि ने उससे शादी करने से इनकार कर दिया।''

राजा के मौन-भंग में सफल वेताल शव सहित ग़ायब हो गया और फिर से पेड़ पर जा बैठा।

(आधार-मनोज गुप्ता की रचना।)

केरल की एक लोक कथा

चतुर पत्नी

कोमन एक गरीब हज्जाम था। वह कडालुण्डी नाम के गाँव का रहनेवाला था जो जैमरिन राजा की राजधानी कोळिकोड के पास ही था। वह घुमन्तु हज्जाम था जो सुबह-सुबह अपने ग्राहकों के घर हजामत बनाने के लिए पहुँच जाता था। आजकल के सैलूनों के विपरीत जिसमें हज्जाम की कैंची और छूरा ग्राहकों के सिर पर या चेहरे पर चलते हुए देखने के लिए चारों ओर दर्पण लगे रहते हैं, कोमन या तो अपने ग्राहकों से ही शीशा माँग लेता था या अपने थैले में से एक छोटा-सा आइना निकालकर उन्हें दे देता था जिसमें वे देख कर तसल्ली कर लेते थे अथवा अन्तिम रूप देने के लिए कुछ निर्देश दे दिया करते थे।

वह किसी के द्वारा बुलाये जाने का इन्तजार नहीं करता था। उसके रास्ते निश्चित थे और उन रास्तों पर रहनेवाले अपने सभी ग्राहकों के काम करता हुआ इस उम्मीद से आगे बढ़ता चला जाता कि वे सब उसकी सेवा लेने के लिए तैयार बैठे होंगे। कभी-कभी वे घर से बाहर गये हुए होते या बीमार होते तब उसे उनके पास किसी और दिन जाना पड़ता। यदि वह उनकी सुविधा के मुताबिक नहीं जा पाता तो वे सब नाराज हो जाते और अगली बार उसके जाने पर उससे हजामत बनाने से इनकार कर देते। जब वह निराश हो वापस जाने के लिए फाटक की ओर मुड़ने लगता, उसके कानों में उनकी बड़बड़ाहट सुनाई पड़ती, "निकम्मा कहीं का।" यहाँ तक कि उसके ग्राहक घटने लगे और उसकी जेब में

सिक्कों की खनखनाहट मन्द पड़ने लगी।

कोमन और उसकी पत्नी गोमती को धीरे-धीरे भूखों मरने की नौबत आ गई। एक दिन गोमती के मुँह से यह कहते सुनकर वह अवाक् रह गया- ''काहिल कहीं का। अब कैसे निर्वाह होगा?''

वह उस दिन चुपचाप रह गया। उसने सोचा कि जब वह दो जून खाने भर काफी पैसे कमाकर लौटेगा तब उसकी राय बदल जायेगी। वह अपना थैला उठाकर दोपहर की रोटी लिये बिना चलता बना। उसने कुछ पैसे जरूर कमाये, लेकिन उसे मालूम था कि वे पैसे दो व्यक्तियों के अच्छे भोजन के लिए काफी नहीं होंगे। वह घर लौट गया और कमाई के थोड़े पैसे जो मिले थे उसके हाथ पर रखते हुए मानो बोला कि शाम और कल सुबह तक काम चला लो। गोमती थोड़े-से पैसों को देखकर झल्ला पड़ी, ''गोबर गणेश!''

दिन बीतते गये। ऐसा कोई दिन नहीं जाता जब उसे अपनी पत्नी से कुछ न कुछ ताना सुनना नहीं पड़ता। एक दिन और पत्नी को देने के लिए उसके पास अधिक पैसे नहीं थे। ''बेकार आदमी! हम कैसे जिन्दा बचेंगे, सोचा कभी?'' पत्नी ने फिर खरी-खोटी सुना दी।

उस दिन उससे जवाब दिये बिना रहा नहीं गया। ''मैं कर भी क्या सकता हूँ? तुम मुझे हमेशा बेकार कहा करती हो जैसे मैंने कभी ठीक काम कभी किया ही नहीं या कभी कर भी नहीं सकूंगा।'' उसने अपना थैला एक कोने में फेंक दिया और हाथ-पाँव धोने चला गया।

जब कोमन हाथ-पाँव धोकर कुएं पर से वापस आया, गोमती वहीं खड़ी थी। वह बोली, ''तुम भूखा मरना चाहो तो मरो, लेकिन मेरा इरादा ऐसा नहीं है।''

''यदि तुम अपने को ज़्यादा होशियार समझती हो'', कोमन ने थोड़ा दुखी होकर कहा, ''तब तुम्हीं क्यों नहीं कुछ सोचती?''

''जाकर भीख माँगो'', गोमती ने कहा।

''भीख?'' कोमन ने पूछा। नाई के थैले की बजाय हाथ में भीख का कटोरा लेकर घूमने के विचार मात्र से वह घबरा गया। ''भीख? कहाँ जाकर माँगू?''

''जैमोरिन के महल में जाओ'', उसने कहा, मानो वह चुनौती दे रही हो। ''उसकी बेटी की जल्दी ही शादी होनेवाली है और मुझे पूरा विश्वास

है कि वह हरेक के साथ मेहरबान रहेगा। तुम उससे कुछ माँग लेना।''

अगली सुबह वह चल पड़ा लेकिन अपने थैले के बिना ही। उसे बहुत दूर पैदल जाना पड़ा। वह सीधे जैमरिन के महल में पहुँचा और राजा से मिलनेवालों की पंक्ति में खड़ा हो गया। जब राजा से मिलने की उसकी बारी आई, तब तक उसने ''कुछ'' माँग लेने का निश्चय कर लिया था, जैसाकि उसकी पत्नी ने उसे सलाह दी थी।

''हज्जाम कोमन!'' महल के परिचर ने आवाज लगाई और उसे राजा के सामने उपस्थित किया गया।

कोमन ने हाथ जोड़कर और झुककर सलाम किया। जब उसने सिर उठाकर राजा क ी ओर देखा, राजा ने पूछा, ''क्या चाहते हो, कोमन?''

''कुछ भी, महाराज!'' कोमन के मुँह से निकल पड़ा।

''कुछ भी?'' जैमॅरिन ने हैरान होकर पूछा, ''तुम्हारा क्या मतलब है? ठीक-ठीक बताओ।'

''कुछ भी, महाराज!'' कोमन ने हाथ जोड़ कर फिर निवेदन किया।

जैमॅरिन ने क्षण भर सोचा और फिर मंत्री की ओर देखा। मंत्री ने राजा के पास जाकर पूछा, ''क्या आज्ञा है, महाराज?''

राजा ने मंत्री के कान में धीमे से कुछ कहा, ''वह हज्जाम है, राज्य के लोगों की सेवा कर रहा होगा। पाँच एकड़ की वह बंजर भूमि उसे दे दो। देखें, उस पर वह कोई फसल उगाता है या नहीं?''

मंत्री ने राजा की बुद्धि की तारीफ की। जो सिर पर की फसलें काटता है, अब उसे फसल उगानी पड़ेगी! उसने एक परिचर को बुलाकर कहा, ''इस आदमी को महल के पूर्वी भाग में पड़ी उस बंजर भूमि पर ले जाओ।'' फिर वह कोमन से बोला, ''यह आदमी तुम्हें पाँच एकड़ भूमि दिखायेगा। यह राजकुमारी के विवाह के अवसर पर राजा की ओर से भेंट है। वापस आकर बताना कि तुम क्या उगाने जा रहे हो और कितना? अब जाओ और सुखी रहो।''

कोमन की खुशी का कोई ठिकाना नहीं था। उसने तो राजा से ''कुछ भी'' माँगा था और क्या से क्या मिल गया। उसे एक ऐसी चीज मिल गई थी जिसे मापा और देखा जा सकता था।

उसकी खुशी थोड़ी-सी तब मुरझा गई जब उसे वह बंजर ज़मीन दिखाई गई। फिर भी वह 'कुछ' तो था जिससे अपनी पत्नी का कड़वा मुँह बन्द कर सकता था।

लेकिन गोमती, आशा के विपरीत, बिलकुल खुश नहीं थी। "जमीन! और वह भी ब ंजर !" वह चिल्लाई। "हम इसका क्या करेंगे? हमारे पास न हल है, न बैल हैं! फिर हम खेत को कैसे जोतेंगे, कैसे बीज बोयेंगे और फसल कैसे काटेंगे? और तब तक खायेंगे क्या? जैमरिन के पास वापस जाओ और इसके बदले कुछ पैसे माँग लाओ। अभी तो इसी की जरूरत है!"

लेकिन कोमन ने जैमॉरिन के पास दुबारा जाने से मना कर दिया। "तुम्हें कुछ करने के लिए सोचना होगा", उसने अपनी पत्नी से कहा।

गोमती ने क्षण भर सोचने के बाद कहा, "मेरे साथ उस भूमि पर चलो और वहाँ पहुँचने पर ठीक वैसा ही करो जैसा मैं करूँगी", ऐसा कह कर वह अपने पति के साथ राजा द्वारा भेंट में दी गई बंजर भूमि पर गई।

जब वे खेत पर पहुँच गये तब गोमती खेत पर चारों ओर चक्कर लगाने लगी। कभीकोई पत्थर को उलटकर देखती, कभी जमीन पर पाँव पटकती और कभी निराश हो जाती। जब गोमती किसी को पास में आते हुए देखती तब वह भूमि पर बैठ जाती और समय काटने का बहाना करती। कोमन भी वैसा ही करता हालांकि उसे मालूम नहीं था कि ऐसा करने से क्या होगा। जब गोमती ने एक पत्थर उठाकर जमीन में झांका, कोमन ने एक दूसरा पत्थर उठाकर वैसा ही किया। उसने भी कई स्थानों पर पैर पटका और जब गोमती बैठी तब वह भी अपने माथे का पसीना पोंछता हुआ बैठ गया। राहगीर उत्सुकता से यह देखने के लिए कुछ देर रुक जाते और फिर अपनी राह चल पड़ते।

चार व्यक्तियों के एक गिरोह ने, इन दोनों को बहुत देर तक देखा। उनमें से एकगोमती के पास जाकर बोला, "इस तपती दुपहरिया में आप क्या कर रही हैं श्रीमती

जी? और आप चिन्तित दिखाई पड़ती हैं!''

गोमती ने नजर उठाकर उस आदमी के चेहरे को थोड़ी देर तक गौर से घूरा। उसने ऐसा अभिनय किया मानो उसे सचाई बताने में संकोच हो रहा है। उसने धीमी आवाज में कहा, "धन्यवाद कि आपने यह सवाल किया। लेकिन यह मैं तभी कहूँगी जब आप वादा करेंगे कि आप इस बात को किसी से नहीं कहेंगे।'' वह थोड़ी देर रुकी। जब उस आदमी ने सिर हिलाया और उसकी धीमी आवाज को सुनने के लिए उसकी ओर कान बढ़ाया, तब वह बोली, ''हमलोग गरीब आदमी हैं; लेकिन हमारे पूर्वज काफी मालदार थे। हमारे परदादा को सोने के घड़ों को इस खेत में गाड़ने की आदत थी, किन्तु वे अब नहीं मिल रहे हैं। खेत काफी बड़ा है और हमें पता नहीं चल रहा कि कहाँ खोदें।''

''यह तो बड़ी दिलचस्प बात है।'' उस आदमी ने अपनी मूँछ ऐंठता हुआ कहा। वह वास्तव में चोर था। ''तुम्हें और तुम्हारे पति को शुभकामनाएँ। मुझे आशा है कि तुम्हें शीघ्र ही खजाना मिल जायेगा।'' वह वापस अपने गिरोह में शामिल हो गया। कुछ दूर जाकर उस पति-पत्नी का राज़ उसने अपने दोस्तों से बताया जो कड़ी धूप में अपनी किस्मत खोज रहे थे।

गोमती तब तक खेत पर ही बैठी रही, जब तक वह आदमी आँखों से ओझल नहीं हो गया। ''चलो, घर लौट चलते हैं। कल फिर आयेंगे।''

जब दूसरे दिन सुबह पति-पत्नी खेत पर आये तब पूरा खेत खोदा हुआ था। शायद उन चोरों ने सोने के घड़ों को पाने की आशा में खेत पर लौट कर यह कठिन श्रम किया होगा।

''देखो, मैंने कैसे पूरे खेत को खुदवाने की तरकीब सोची'', गोमती ने कहा। ''अब हमें बाजार जाकर कुछ बीज खरीदने हैं और उन्हें खेत में बोना है। मैं अब उन दिनों की आशा करने लगी हूँ जब दिन में एक बार नहीं, बल्कि तीनों बार भोजन मिलेगा। तुम्हारा क्या ख्याल है, मेरे बेकार पतिदेव महाराज!''

''शाबाश! मेरी चतुर श्रीमती!'' मुस्कुराता हुआ कोमन बोला।

अंग्रेजी, राजकीय भाषा

जबकि हिन्दी राष्ट्रभाषा है, क्योंकि आबादी के अधिकांश इसे बोलते हैं, अंग्रेजी पूरे देश में लिखने और बोलने में प्रयुक्त होती है यद्यपि भारतीय संविधान में राजकीय भाषाओं में इसे शामिल नहीं किया गया है। फिर भी एक ऐसा राज्य है जहाँ अंग्रेजी को राजकीय भाषा का दरजा प्राप्त है। उत्तर-पूर्वी राज्य नागालैंड ने अंग्रेजी को राजकीय भाषा बनाया है। यह सन् १९६३ में पूर्ण विकसित राज्य घोषित किया गया। नागालैण्ड में अंग्रेजी की शिक्षा ईसाई मिशनरियों द्वारा दी गई। दूसरी जनभाषा नागमिज है जिसकी अपनी कोई लिपि नहीं है।

We speak English

मेट्टूप्पालयम उटकमण्ड रेलवे को, जिसे आम तौर पर नीलगिरि रेलवे के नाम से लोग जानते हैं, विश्वविरासत की सूची में शामिल कर लिया गया है। दार्जिलिंग हिमालय रेलवे, जो विरासत सूची में पहले से शामिल है, तथा नीलगिरि रेलवे दोनों को मिलाकर अब माउण्टेन रेलवे ऑफ इन्डिया बना दिया गया है। नीलगिरि रेलवे का काम सन १८८५ में आरम्भ किया गया था। सन १८९९ में कूनुर तक रेलवे चालू कर दिया गया। क्रमशः इसे ऊटी तक बढ़ा दिया गया। इस रेलवे को एशिया भर में सबसे अधिक लम्बा और ढालू माना जाता है। इसकी लम्बाई ४६ कि.मी. है।

चन्दामामा प्रश्नावली-४

जो सही उत्तर देंगे, उनमें से एक को २५० रुपये दिये जायेंगे।*

इस प्रश्नावली में जो भी प्रश्न पूछे गये हैं, वे सबके सब जनवरी व दिसंबर २००५ के बीच में चन्दामामा के अंकों में प्रकाशित कहानियों व शीर्षकों में से लिये गये हैं, जिन्हें आप पढ़ चुके हैं। वे यदि याद हों तो इन सबके उत्तर आप तुरंत बता सकेंगे। यदि याद नहीं हों तो बारहों अंकों को सामने रख लें और पन्ने पलटें तो उन्हें आसानी से जान जायेंगे। अवश्य ही बड़ा मज़ा आयेगा।

**सही उत्तर देनेवाले एक से अगर अधिक हों तो पुरस्कार की रक़म ड्रा द्वारा निकाले गये सही उत्तर देनेवाले पाँच लोगों में समान रूप से बाँटी जायेगी।*

आपको यह करना है: १. उत्तर लिखिये, २. अपना नाम और उम्र (१६ बर्ष की उम्र के अंदर होना आवश्यक है); पिनकोड सहित सही पता हो, ३. अभिदाता हों तो वह संख्या लिखिये, ४. लिफ़ाफ़े पर **चन्दामामा प्रश्नावली-४** लिखें और उसे चन्दामामा के पूरे पते पर हमें भेजिये, ५. मई महीने के अंत तक आपकी प्रविष्टि हमें मिल जानी चाहिये, ६. जुलाई महीने के अंक में परिणाम प्रकाशित किये जायेंगे।

१. अपराध करने की प्रवृत्ति प्रबल होती जा रही है। उनके मूल कारणों का अन्वेषण करके अपराध को रोकने का सही मार्ग क्या है, यह सत्य जानकर एक आदर्श राजा उसे अमल में ले आया। उस राजा का क्या नाम है? किस कहानी में यह अंश है?

२. एक राक्षस राजा ने अपने उस सौतेल छोटे भाई को जाति द्रोही कहकर निंदा की, जिसने उसे हितवचन बताये। उस छोटे भाई का क्या नाम है?

३. संयुक्त राष्ट्र संघ के महा असेंब्ली ने बच्चों के अधिकारों को लेकर एक प्रस्ताव पारित किया। यह प्रस्ताव कब पारित हुआ?

४. हमारे पूरे देश में बाघों के कितने अभयारण्य हैं?

५. जिसे छोड दिया है, उसे छोड़ ही दो। ऐसे व्यक्ति की मैत्री की आशा मत करो। जो अपेक्षा रहित है, उसके प्रति आदर भाव मत दिखाना। पक्षी उन बृक्षों को छोड जाता है, जिनमें फल नहीं होते। उन बृक्षों पर वे जा बसते हैं, जिनमें फल होते हैं। लोक सुविशाल है। यह सुभाषित किस कहानी में है?

६. निम्नलिखित चित्र में दोनों पात्र कौन-कौन हैं?

सच्चाई की राह

एक गाँव में भोला नामक एक मेहनती किसान रहता था। अपने नाम के अनुरूप ही वह अत्यंत भोला था। उसका एक खेत था, जिसमें वह अन्न उगाकर बेचता, और अपने परिवार का भरण-पोषण करता था। वह अत्यंत दयालु था। यदि उसे कभी कोई घायल जीव-जन्तु भी मिलता, तो वह उसे घर लाकर उसका उपचार करता।

भोला के खेत के साथ ही विश्वनाथ नामक एक पंडित का घर था। वह अत्यंत धूर्त था। वह गाँव के भोले-भाले लोगों को ठगकर अपनी जीविका चलाता था। फिर भी उसका गाँव में बहुत सम्मान था। परंतु वह दिन-रात भोला से ईर्ष्या करता रहता था।

एक दिन की बात है, भोला अपने खेत में बीज बो रहा था। अकस्मात् ही उसकी नजर एक घायल चिड़िया पर पड़ी। दयावश वह अपने खेत का काम अधूरा छोड़कर उस चिड़िया को घर लाकर उसके उपचार में लग गया। उपचार के बाद उसने उसे बिस्तर पर लेटा दिया। जैसे ही वह अपने काम पर जाने लगा, उसे एक अत्यंत मधुर स्वर सुनाई दिया। पीछे देखा तो पाया कि चिड़िया की जगह एक सुन्दर स्त्री खड़ी है।

उसका मुखमंडल सूर्य के समान दमक रहा था। उसने कहा, "भोला, मैं तुमपर अत्यंत प्रसन्न हूँ। मैं वन देवी हूँ। तुम मुझसे वर माँगो।"

भोला ने हाथ जोड़कर मस्तक झुकाया और कहा, "माता, आपने मुझे दर्शन दिया, इसी से मेरा जीवन धन्य हो गया। मुझे और कुछ नहीं चाहिए।"

भोला की इस नम्रता पर वन देवी और भी प्रसन्न हुई और उसे अशर्फियों से भरा एक घड़ा प्रदान किया और चली गई।

एक विद्यार्थी एक आदत थी कि जब भी उसे निबंध लिखने को कहा जाता, वह गाय पर ही निबंध लिखता।

वह लिखता, "गाय एक दुधारू पशु है, उसके चार पैर होते हैं, उसके दो सींग होते हैं आदि-आदि।"

एक दिन उसके अध्यापक ने खिन्न होकर उसे "ताजमहल" विषय पर ही निबंध लिखने को कहा।

बालक ने लिखना शुरू किया, "ताजमहल आगरा

में है। इसे शाहजहाँ ने बनवाया था। इसके सामने एक झोंपड़ी है जिसमें एक गाय रहती है। गाय एक दुधारू पशु है .... इत्यादि।"

अब आप शिक्षक की मनोदशा समझ सकते हैं। *- भावना राय, नई दिल्ली*

इधर सारे गाँव में यह खबर फैल गई कि भोला को कहीं से छुपा हुआ धन मिल गया है। पंडित विश्वनाथ ने भी यह समाचार सुना। उसने सोचा, 'अच्छा अवसर है, मैं भोला का धन चुरा लूँगा और किसी और गाँव में जाकर आराम का जीवन व्यतीत करूँगा।' यह सोचकर पंडित विश्वनाथ रात को चोरी से भोला के घर में घुसा। ज्यों ही उसने घड़े में हाथ डालना चाहा, भोला के पालतू कुत्ते शेरा ने उसे देख लिया और उसने गुस्से से गुर्राते हुए झपटकर उसका हाथ अपने मुँह में दबोच लिया।

विश्वनाथ ने बड़ी कठिनता से अपना हाथ छुड़ाया। परन्तु ऐसा करते हुए उसकेमुँह से चीख निकल गई, "अरी मैया रे, मार डाला।" यह सुनकर भोला और उसका परिवार जाग गया। आस-पड़ोस के लोग भी आ गए।

जब भोला ने पास ही पड़े घड़े को देखा तो वह सब समझ गया। जब गाँववालों को पूरी बात का पता चला तो वे गुस्से से भड़क उठे। वे विश्वनाथ को मारने के लिए आगे बढ़े तो भोला ने उन्हें रोक दिया और समझा - बुझाकर वापस भेज दिया।

विश्वनाथ उसके पैरों में गिर पड़ा और बोला, "भोला, तुम वास्तव में अत्यंत महान और उदार हो। मैं तो तुम्हारा अहित ही करने आया था पर तुमने मुझे बचाया। मुझे माफ कर दो।"

भोला ने कहा, "भाई, तुम्हें अपनी भूल का एहसास हो गया, यही मेरे लिए बहुत बड़ी बात है। माफी मुझसे नहीं, अपने ईमान से माँगो, चोरी करके जिसे तुम ठेस पहुँचा रहे थे और वादा करो कि भविष्य में सदैव सच्चाई की राह पर चलोगे।"

"मैं वादा करता हूँ भोला भाई, वादा करता हूँ" कहकर विश्वनाथ भोला के गले लग गया।

- भावना राय, नई दिल्ली

ग़रीब की प्रार्थना

दस साल की उम्र में मातंग के माता-पिता मर गये तो वह दूर के एक रिश्तेदार के साथ रहने लगा। जब उस रिश्तेदार को मालूम हो गया कि मातंग बड़ा ही नादान है तो वह उससे ज़्यादा से ज़्यादा मेहनत कराने लगा। फिर भी उसे खाना पेट भर नहीं देता था। उसकी इस दुस्थिति को पडोसी नागराज ने देखा तो एक दिन उसने उससे एकांत में कहा, ''अरे मातंग, कब तक ऐसी ज़िन्दगी गुज़ारते रहोगे? यही काम कहींऔर करोगे तो पेट भर खाना मिलेगा। महिषापुर में पद्मनाभ मेरा रिश्तेदार है। तुम उसके पास चले जाओ। वह कोई अच्छा रास्ता दिखायेगा।''

मातंग महिषापुर गया और पद्मनाभ को अपना दुखड़ा सुनाया। पद्मनाभ ने उससे कहा, ''मैं अमीर नहीं हूँ, नौकर की मुझे कोई ज़रूरत भी नहीं है, पर मेरे रिश्तेदार नागराज ने तुम्हें भेजा है, इसलिए तुम्हें घर में रख लूँगा और पेट भर खाना दूँगा। जहाँ मैं काम करने के लिए कहूँगा, हर रोज़ तुम्हें वहाँ काम करना होगा और किसी से भी रक़म की माँग करनी नहीं होगी।''

भोले-भाले मातंग ने 'हाँ' के भाव में सिर हिला दिया। पद्मनाभ गाँव के कुछ लोगों के घर उसे भेजता था और उसके बदले धन बसूल करता था। मातंग को हर दिन खाना खिलाता था, पर नकद एक पैसा भी देता नहीं था।

मातंग समझने लगा कि अपने गाँव के रिश्तेदार से यह आदमी बेहतर है।

यों कुछ दिन गुज़र गये। एक दिन सबेरे नींद से जब वह जागा तब उसके बदन में दर्द हो रहा था। उसने पद्मनाभ से जब यह बात कही तो उसने साफ़-साफ़ कह दिया, ''इस बहाने काम करना छोड़ दोगे तो तुम्हें खाना नहीं मिलेगा। याद रखो, काम करने पर ही तुम्हें खाना मिलेगा।''

उस समय मातंग भूखा भी नहीं था, इसलिए

वह उस दिन काम पर नहीं गया। वह एक वैद्य के घर गया और उससे अपने दर्द की बात बतायी। वैद्य ने उसकी परीक्षा की और कहा, "तुम्हें बुखार है। रक़म दोगे तो दवा दूँगा।"

"महाशय, मेरे पास फूटी कौडी भी नहीं है। आप अगर दवा देंगे तो ठीक हो जाने के बाद आपके यहाँ काम करके कर्ज चुका दूँगा।" मातंग ने कहा। वैद्य ने उसकी शर्त नहीं मानी । उसने कहा, "जिस किसी के भी घर में काम करोगे, उसका मेहनताना पद्मनाभ को मिलेगा। अब तुम पद्मनाभ से माँगकर रक़म ले आओ। रक़म मिलने पर ही मैं तुम्हें दवा दूँगा।"

वैद्य की बातों से मातंग समझ गया कि पद्मनाभ लोगों के घरों में उससे काम करवाकर उनसे पैसे वसूल कर रहा है। वह सीधे पद्मनाभ के पास गया और वैद्य का कहा बताया।

पद्मनाभ ने नाराज़ होते हुए कहा, "मैंने तो कहा था कि तुम्हें पेट भर खाना दूँगा, पर मैंने यह नहीं कहा था कि तुम्हारा इलाज कराऊँगा। तुम जो काम करते हो, उसका मेहनताना तुम्हारे खाने के लिए भी पर्याप्त नहीं है। तिसपर तुम्हें घर के चबूतरे पर मुफ़्त में सोने भी देता हूँ।"

"मैं अब बीमार हूँ, इलाज कराने के लिए मुझे पैसे दे दीजिये। फिर उसके बाद आप जो कहेंगे, करूँगा।" मातंग गिडगिडाया।

परंतु, पद्मनाभ अपनी बात पर डटा रहा और कहा, "ग़रीब समझकर घर में आश्रय दिया तो मुझ से ही पैसे ऐंठना चाहते हो? जाओ, कोई मदद करने को तैयार हो तो इलाज करा लो।"

मातंग उस हर घर के मालिक के पास गया, जहाँ उसने काम किया। परंतु हर व्यक्ति ने उसकी मदद करने से इनकार कर दिया। वह फिर वैद्य के यहाँ गया और दीन स्वर में उससे कहा, "मैं अनाथ हूँ। दया करके मेरा इलाज कीजिये। किसी न किसी दिन आपका ऋण अवश्य चुकाऊँगा।" कहते-कहते उसकी आँखों में आँसू उमड़ आये।

"अनाथों के रक्षक भगवान हैं, वैद्य नहीं," वैद्य ने कड़े स्वर में कह दिया।

मातंग निराश होकर शिवालय की तरफ़ जाने लगा। अचानक ज़ोर की वर्षा होने लगी। वह शिवालय के सामने जाकर दीन स्वर में कहने लगा, "भगवान, आँखों के आगे अंधेरा छा रहा है। कमजोरी के कारण खड़ा भी हो नहीं पा रहा हूँ।
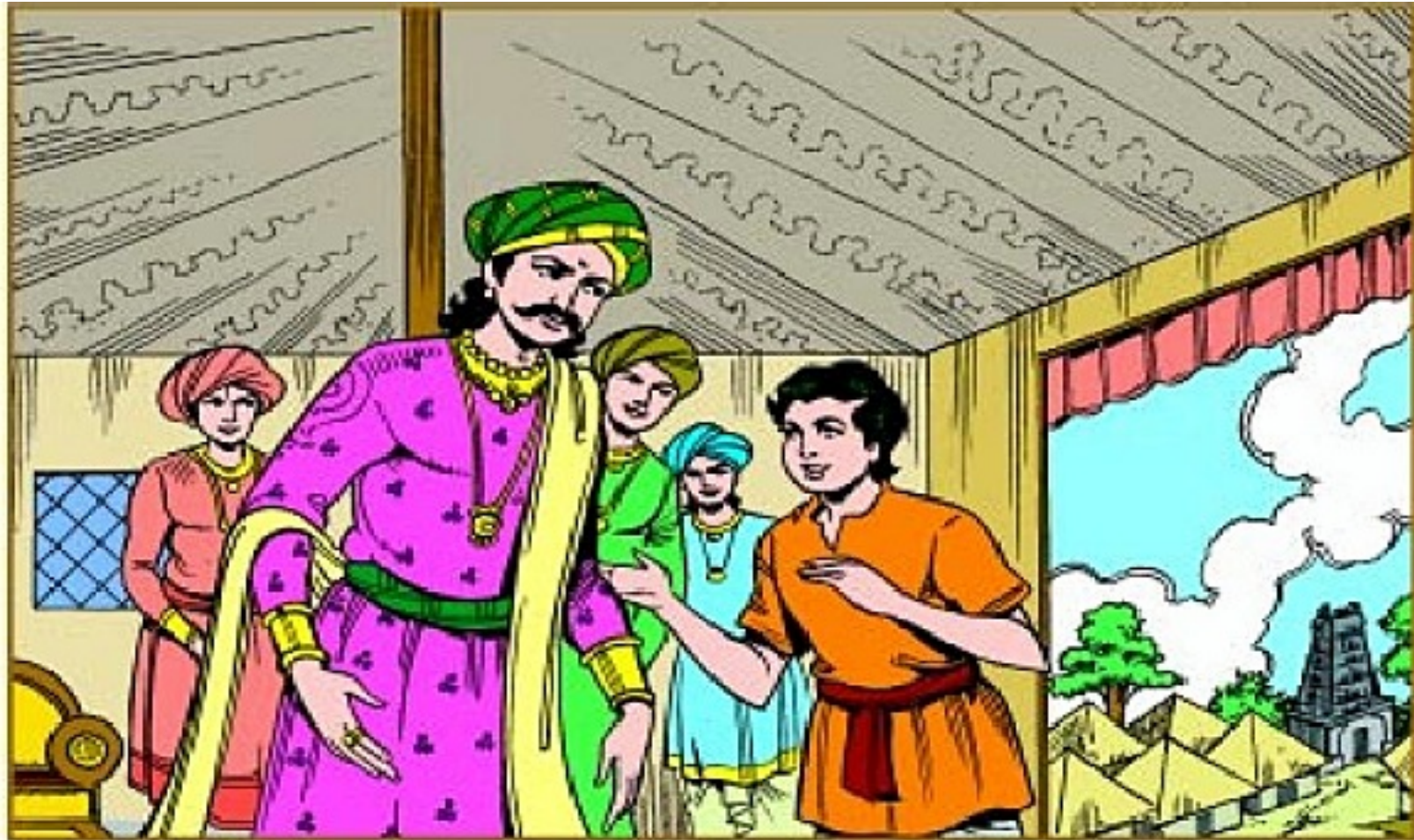
तुम्हें ही मेरी रक्षा करनी होगी।'' कहते हुए वह नंदी की मूर्ति के बग़ल में बेहोश होकर गिर गया।

पाँच छः मिनटों के अंदर ही, गोदावरी नदी तीव्र रूप से प्रवाहित होती हुई गाँव में प्रवेश कर गई। उस प्रवाह में सब झोंपडियाँ बह गयीं। कितने ही घर पानी में डूब गये। कितने ही एकडों की फसल नष्ट हो गयी। इस विपत्ति से बचने में सब ग्रामीण जुट गये। ग्रामाधिकारी अपने कर्मचारियों को लेकर सबकी सहायता करने लगा। मंदिर के सामने बेहोश पडे मातंग को किसी ने बचाया और उसे सुरक्षित स्थल पर ले गया।

जैसे ही उस देश के राजा को यह समाचार मालूम हुआ, उसने नंदी बर्मा नामक व्यक्ति को राजप्रतिनिधि बनाकर महिषापुर भेजा। पुनर्वास केंद्रों में निराश्रयों के आश्रय का प्रबंध उसने किया। बाढ़ से पीडित लोगों को आहार, कपड़े दिये गये। चिकित्सा का प्रबंध भी किया गया।

रक़म चुकाये बिना ही मातंग की चिकित्सा हुई। काम किये बिना ही उसे आहार मिला। बाढ़ की वजह से जो बच्चे अनाथ हुए, उनकी पढ़ाई का भी इंतजाम किया गया। मातंग यह सब देखते हुए बेहद खुश हुआ।

मातंग को लगा कि परमशिव ने उसकी प्रार्थना सुन ली और अपने दूत को महिषापुर भेजा। वह नंदी वर्मा से मिला और उसके पैरों को छू कर प्रणाम करते हुए बोला, ''महोदय, परमशिव को धन्यवाद, जिन्होंने मेरी और गाँववालों की रक्षा की। वे अपरंपार हैं।''

नंदीवर्मा की समझ में नहीं आया कि मातंग कहना क्या चाहता है। उसी से पूरे विवरण जानने

के बाद उसने मातंग से कहा, ''देखो, मैं शिव का दूत नहीं हूँ। तुम जैसे अनाथों की सहायता करने आया, राजा का भेजा राज प्रतिनिधि हूँ। हमारे देश के राजा उत्तम व आदर्श राजा हैं। वे सुखी होंगे तो तुम जैसे लोगों का भला होगा। परमशिव में अगर तुम्हारा गाढ़ा विश्वास हो तो उनसे प्रार्थना करो कि वे हमारे राजा को स्वस्थ रखें, लंबी उम्र और ऐश्वर्य दें।''

मातंग ने तुरंत आँखें बंद कर लीं, हाथ जोडे और प्रार्थना करने लगा, ''हे भगवान, निस्संदेह ही तुम हर जगह हो। इसीलिए यहाँ खड़े होकर प्रार्थना कर रहा हूँ। हमारे देश का राजा उत्तम व आदर्श राजा है। उनपर अपनी कृपा बरसाइये। हम जैसे अनाथों की सहायता करनेहर गाँव, शहर में गंगा मैय्या को भेजना और पानी में डुबो देना।''

नंदीबर्मा नाराज़ हो उठा और कड़कते हुए कहा, ''अरे मूर्ख, यह भी कोई प्रार्थना हुई ! हर जगह बाढ़ आये, यही तेरी इच्छा है? जानते हो, यह कितना अनर्थकारी है?''

नादान मातंग ने कहा, ''महाशय, जब मैं बुखार से तड़प रहा था तब गाँववालों ने मेरी सहायता नहीं की। वैद्य ने भी मेरा इलाज करने से इनकार कर दिया। बाढ़ नहीं आती तो बुखार के कारण शायद मैं मर भी जाता। जिन गरीबों के पास आहार, कपड़े व रहने की जगह नहीं होती, भला बाढ़ से उनकी क्या हानि होगी। राजा जो भी हमें देते हैं, उससे हमारा लाभ ही होता है। लाभ के लिए प्रार्थना करना क्या ग़लत है?''

नंदीबर्मा पहले तो भौंचक्का रह गया, पर वास्तविकता जानने के बाद समझ गया कि मातंग की प्रार्थना में कितनी सचाई है। राजधानी पहुँचने के बाद उसने यह बात राजा से बतायी। राजा ने निश्चय किया कि बाढ़ों के समय ही नहीं, बल्कि सब समय वे ग़रीबों की सहायता करेंगे। उन्होंने इसके लिए आवश्यक योजनाएँ बनवाकर उन्हें कार्यान्वित कराया।

मातंग की प्रार्थना के कारण जो योजनाएँ बनीं, उनसे पूरे देश को लाभ पहुँचा।

महान पुरुषों के जीवन की झाँकियाँ - ५

प्रकृति में छिपा उल्लास

मौनसून के निकट होने के कारण सुबह की नीरवता और गहरी हो गई थी। वैसे भी, १५० वर्ष पूर्व ग्राम्य भारत का वातावरण शान्त हुआ करता था। मोटर गाड़ियाँ नहीं थीं, माइक्रोफोन्स, रेडियो या सिनेमा घरों का अता-पता नहीं था।

छ:वर्ष का एक बालक अपने गाँव के निकट धान का खेत पार कर रहा था। उसे शान्ति प्रिय थी। हरे-भरे खेत और वृक्ष उसे अच्छे लगते थे जो, लगता था, जैसे वर्षा की अभीप्सा और आशा में ऊपर निहार रहे हों। आसमान में काले बादल इतनी तेजी से फैल रहे थे कि कुछ ही क्षणों में सारा आकाश काले मेघों से ढक गया।

बालक रुक गया और क्षितिजों को स्पर्श करते हुए बृहत आकाश की ओर टकटकी लगाकर देखने

लगा। प्रकृति कितनी भव्य है! वह मन्त्रमुग्ध था। शीघ्र ही, शीतल वायु के स्नेहिल झोंकों ने उसे प्यार से सहलाया और पत्तियों की सरसराहट में छिपे मधुर संगीत की लहरियों ने उसकी अन्तरात्मा के तार को झंकृत कर दिया। आह! संसार कितना उल्लासपूर्ण है।

अचानक, उसे आसमान में, मंडराते गहरे नीले और श्याम मेघों के पृष्ठपट में उड़ते दुधिया बगुलों की एक पंक्ति दिखाई पड़ी। उसका हर्षोल्लास आनन्दातिरेक में बदल गया। हे प्रभु! इस दिव्य दृश्य को कैसे आत्मसात करें। सम्पूर्ण सत्ता द्वारा इसकी अलौकिकता का कैसे करें बखान!

बादलों और बगुलों के रहस्यमय सौन्दर्य तथा आसमान के अनन्त बिस्तार और बिशालता पर वह चकित हो गया और चेतना खो बैठा। वह मखमली घास पर घण्टों लुढ़का पड़ा रहा। भाग्यबश कुछ ग्रामीण उधर से गुजरे, जो बच्चे को जानते थे। वे उसे घर ले गये।

वह बालक और कोई नहीं, बंगाल में कमरपुकुर गाँव के गदाधर थे जो कालक्रम में श्री रामकृष्ण परमहंस के रूप में प्रसिद्ध और संपूजित हुए (१८३६-१८८६)। उनकी उस प्रातःकालीन अनुभूति को समाधि कहते हैं जो एक प्रकार के लोकोत्तर आनन्द के भाव का अनुभव है। योग के द्वारा चेतना की इस स्थिति को उपलब्ध किया जा सकता है। लेकिन गदाधर को यह अनुभूति सहज और स्वाभाविक रूप से मिली जो उस दिन से आरम्भ होकर निरन्तर होती रही। समाधि की अवस्था में एक ऐसे स्वर्गिक आनन्द की अनुभूति होती है जो कोई भौतिक सफलता या प्रिय से प्रिय आकांक्षा की संतुष्टि नहीं दे सकती।

सचमुच, कितना अपार सौन्दर्य बिखरापड़ा है सूर्योदय में, सूर्यास्त में, पुष्पों में, सितारों में, बादलों में, यदि हमें मालूम हो कि उन्हें कैसे खोजें। प्रसिद्ध कबि बिलियम ब्लेक (१७५७-१८२७) के शब्दों में सच्चे आनन्द की उपलब्धि तभी होगी: *रेत के हर कण में जब देखोगे संसार औ' स्वर्ग-छटा को बन के एक सुमन में; अपनी मुट्ठी में भर लोगे जब अनन्त बिस्तार; लोगे शाश्वत को पकड़, काल के एक क्षण में।*
श्री रामकृष्ण तथा अन्य योगियों के जीवन से पता लगता है कि यह सम्भव है।

चन्दामामा प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता-२ के उत्तर :

१. पच्चीस।
२. मार्च २१, २२।
३. श्रीधर, धैर्ये साहसे लक्ष्मी।
४. अरण्यों का निर्मूलन, नदियों का कालुष्य, शब्द का लुष्य, बायु कालुष्य, भूकालुष्य।
५. देवताओं का बिनोद।
६. एक बिलक्षण भविष्यवाणी।
७. सुजु, उसकी पत्नी और उसका बच्चा।

समाचार झलक

सिर का प्रयोग

निजी क्षेत्र की स्कूली शिक्षा अमरीका में भी सस्ती नहीं है। किन्तु पैसे कमाने के बहुत तरीके हैं, जैसा कि एक साहसी महिला ने सिद्ध कर दिया है। तीस वर्षीय कैरोलिन स्मिथ ने अपने बेटे की स्कूल फीस देने के लिए अक्षरशः अपने सिर का इस्तेमाल किया है। उसने अपने सिर के स्थान को विज्ञापन के प्रयोग के लिए इन्टरनेट द्वारा नीलाम किया और सचमुच यह कारगर साबित हुआ जबकि एक कैसिनो उसके ललाट पर अपना नाम अमिट स्याही से लिखवाने के लिए १०,००० डॉलर देने को राजी हो गया।

स्थानीय प्रेस साल्ट लेक सीटी ऊटा में जीता-जागता गोदना देखने के लिए मौजूद था। अधिकांश दर्शकों को इस तमाशे पर हँसी आ रही थी, यद्यपि अनेक, ब्रैण्ड मार्केटिंग की इस नई प्रवृत्ति पर चकित मालूम पड़ रहे थे। श्रीमती स्मिथ ने बताया, "मैं सचमुच यह करना चाहती हूँ। दूसरों को ऐसा करना नासमझी लग सकता है। मेरे लिए दस हजार डॉलर दस लाख डॉलर के बराबर है। मुझे केवल एक बार जीवित रहना है और यह मैं अपने बेटे के लिए कर रही हूँ।...अपने बेटे के बेहतर भविष्य के लिए यह एक छोटा-सा बलिदान है।" क्या हुआ यदि यह विचार बेतुका लग रहा है- आखिर यह एक अच्छे उद्देश्य के लिए है।

खेल-कूद विश्वविद्यालय

चेन्नई का कॉलेज ऑफ फिजिकल एडूकेशन एक अग्रणी संस्था है। अब, सब कुछ अनुकूल होने पर, चेन्नई को शीघ्र ही, खेल-कूद को बढ़ावा देने के लिए एक मात्र खेलकूद विश्वविद्यालय बनाने का गौरव प्राप्त होगा जो अपने तरह का पहला संस्थान होगा। भारत के राष्ट्रपति डॉ.ए.पी.जे.अब्दुल कलाम ने ऐसे विश्वविद्यालय की स्थापना की योजना का अनुमोदन कर दिया है। यह संस्था चेन्नई के उपनगर श्री पेरुमबुदुर या कारईकुडी में सम्भवतः स्थापित होगी।

भक्ति का फल

श्रीनिवासपुर नामक गाँव में सुंदर नामक एक मोची रहा करता था। चप्पल सीने में वह बड़ा ही माहिर था। अपने पेशे के प्रति उसमें अपार भक्ति थी। सवेरे उठते ही चप्पल सीने की सामग्री को वह भक्तिपूर्वक प्रणाम करता था। उसके बाद भी वह अपना दिनचर्या प्रारंभ करता था।

सुंदर की पत्नी कांचना गुणवती थी। बालाजी की भक्त थी। बचपन से ही वह बालाजी की महिमाएँ सुनती आ रही थी, इसलिए वह सपने देखा करती थी कि कम से कम एक बार ही सही, तिरुपति जाऊँ और बालाजी के दर्शन करूँ। पर यह सोचकर निराश हो जाती थी कि मुझ जैसी ग़रीब को वहाँ तक जाना कैसे संभव होगा। परंतु दिन ब दिन बालाजी के दर्शन की इच्छा उसमें प्रबल होती गयी।

सुंदर अपनी धर्मपत्नी कांचना को बेहद चाहता था। उसे तिरुपति ले जाना अपना परम कर्तव्य मानता था। कड़ी मेहनत करता था, पर उसकी कमाई बहुत ही कम थी। जो भी कमाता था, वह उस दिन के खर्च के लिए भी कम पड़ती थी। अपने पति की इस असहायता को देखते हुए कांचना ने निर्णय कर लिया कि अगल-बगल के घरों में नौकरानी का काम करूँगी और यथासंभव धन कमाऊँगी। यह जानकर सुंदर दुखी हुआ और कहा, ''मेरी कमाई से घर चल रहा है। नौकरानी का काम करने की तुम्हें क्या ज़रूरत है। मुझे तुम्हारा यह निर्णय बिल्कुल पसंद नहीं। आगे तुम्हारी मर्जी।''

कांचना ने कहा, ''कल संतान होगी तो जिम्मेदारी और बढ़ जायेगी। अपनी कमाई खर्च किये बिना रख लूँगी तो तब जाकर हमें मुश्किलों का सामना करना नहीं पड़ेगा।''

एक साल के बाद कांचना ने बचायी रक़म गिनी तो उसे लगा कि यह रक़म तिरुपति जाने

अरविंद फुले
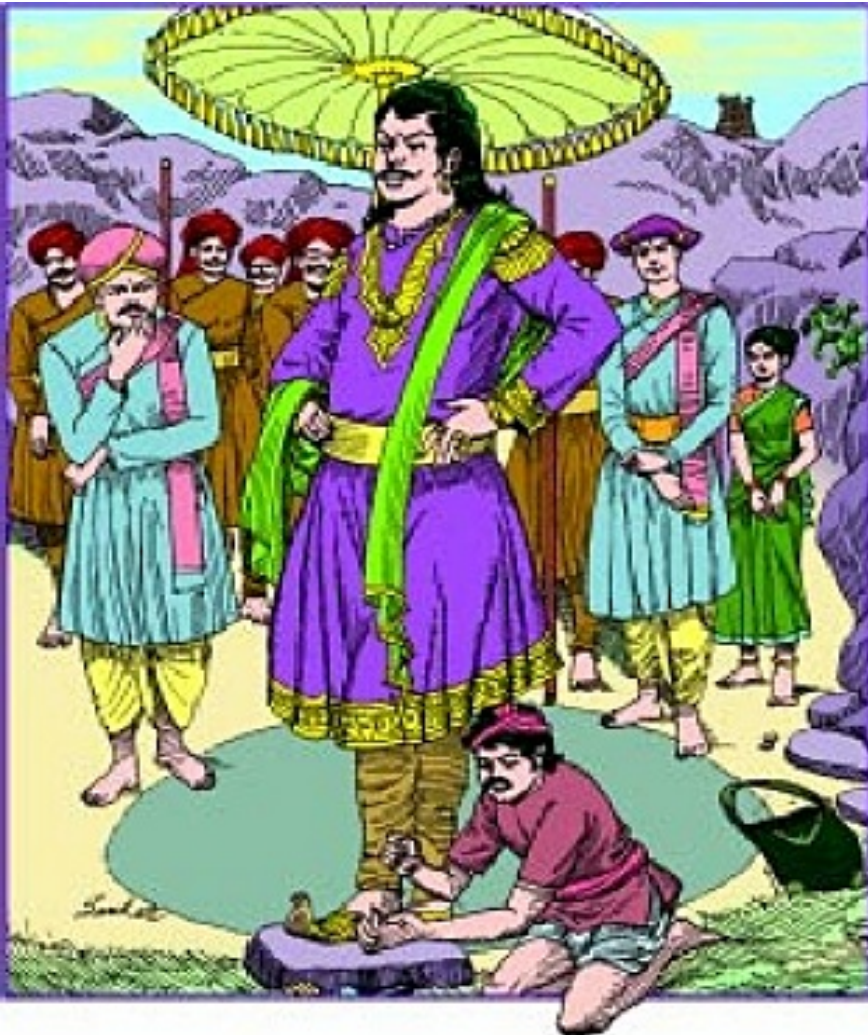
के लिए पर्याप्त होगी। उसने वह रक़म पति को सौंपते हुए कहा, ''चलिये, इस रक़म से हम दोनों तिरुपति जाकर भगवान बालाजी के दर्शन करके आयेंगे।''

पत्नी की जिद पर सुंदर खुश हुआ। तिरुपति जाने की उसने स्वीकृति दे दी। परंतु, अचानक उसमें एक संदेह जगा। उसे लगा कि तिरुपति जाने के लिए पत्नी की कमाई एक ही के लिए काफी होगी। इस रक़म से दोनों का जाना संभव नहीं है। यह संदेह उसने पत्नी से व्यक्त किया तो उसने कहा, ''जाएँगे तो दोनों मिलकर ही जायेंगे। भगवान बालाजी को हमारा दर्शन करना स्वीकार्य हो तो वे ही हमारी वापसी के खर्च का प्रबंध करेंगे।''

सुंदर को पत्नी की सलाह सही लगी। दोनों तिरुपति जाने निकल पड़े। अपने साथ वह चप्पल सीने की छोटी-मोटी सामग्री भी लेता गया। उन्हें थैली में डालने के पहले प्रणाम भी किया।

कुछ दिनों की यात्रा के बाद दंपति तिरुपति पहुँचे। पर्वत पर चढ़कर वे जब मंदिर के निकट पहुँचे तब उन्होंने देखा कि तिरुचानूर के जमींदार भी पैदल भगवान के दर्शन करने जा रहे हैं। उसके सेवक छाता लिये साथ-साथ जा रहे हैं। इतने में जमींदार का एक चप्पल टूट गया। उनसे पैदल चलना मुश्किल हो गया। इस दृश्य को देखते ही सुंदर जमींदार के पास गया, उन्हें सविनय प्रणाम किया और कहा, ''मालिक, आप अनुमति दें तो मैं एक क्षण में आपका चप्पल सी दूँगा।'' कहते हुए उसने थैली में से चप्पल सीने की सामग्री निकाली और बड़ी सुई व धागा निकालकर चप्पल को जमींदार के पैर से निकाले बिना सी डाला। उसके नैपुण्य पर जमींदार खुश हुए। उन्होंने सुंदर की खूब प्रशंसा की।

उसी समय जमींदार का एक रिश्तेदार उधर से गुज़र रहा था। जमींदार को देखकर उसने कहा, ''वाह, आप यहीं हैं। अच्छा हुआ, आपसे मिल पाया।'' फिर वे दोनों मंदिर की ओर बढ़ते हुए गये।

सुंदर दंपति भी उनके पीछे-पीछे गये और भगवान के दर्शन किये। उन्हें लगा कि भगवान के दर्शन करके उनका जन्म धन्य हो गया। मंदिर

में जो प्रसाद प्राप्त हुआ, उसे खाकर पेट भर लिया और बाहर आये। तब तक पूरी रक़म खर्च हो चुकी थी। वे सोच में पड गये कि गाँव कैसे लौटें। तब जमींदार के दो सेवक उनके पास आये और उन्हें पहचानकर बोले, ''तुम लोग यहाँ हो। हम तुम्हें ही तलाश रहे हैं। जमींदार बुला रहे हैं। चलो।''

''रिश्तेदार से बातें करने में लग गया और तुम्हारे बारे में भूल ही गया। तुम किस गाँव के हो? भगवान के दर्शन करने इतनी दूर चले आये?'' बड़े प्यार से जमींदार ने उनसे बातें कीं।

सुंदर ने अपनी और पत्नी की दीर्घकालीन इच्छा के बारे में स विस्तार बताया। सब सुन चुकने के बाद जमींदार ने कहा, ''इसका मतलब यह हुआ कि थोडी-सी रक़म लेकर भगवान के दर्शन करने तुम दोनों निकल पड़े। भगवान के दर्शन करने के लिए निकलते समय भी अपने पेशे की सामग्री साथ-साथ ले आये हो, जो यह बताता है कि अपने पेशे पर तुम कितनी भक्ति रखते हो। तुम्हारी प्रशंसा कितनी भी की जाए,कम है। पेशे के प्रति जो भक्ति होती है, वह दैव भक्ति के समान है। तुम जैसे का भविष्य भी अच्छा होता है। अपने पेशे की वृद्धि के लिए जो पूँजी तुम्हें चाहिए, मैं उसका प्रबंध करता हूँ।'' यों जमींदार ने सुंदर की प्रशंसा की, मोटी रक़म दी और साथ ही भेंटें भी दीं। उन्हें भोजन खिलाकर विदा किया।

स्वग्राम लौटे सुंदर दंपति ने जमींदार की दी रक़म से चप्पल सीने की बढ़िया सामग्रियाँ खरीदीं और चप्पल बेचने के लिए एक जगह भी किराये पर ली। वे अच्छी और टिकाऊ चप्पलें तैयार करने लगे और बेचने लगे, जिससे उनकी कमाई में भी काफी वृद्धि हुई। कांचना ने, ''देखी, भगवान की महिमा! उन्होंने हमें अपने पास बुलाया और अपने पेशे पर तुम्हारी जो अपार भक्ति है, उसके लिए भेंट स्वरूप हमारे लिए इतनी सहूलियतों का इंतज़ाम किया,'' भक्तिपूर्वक कहा। सुंदर ने ''हाँ'' कहते हुए दोनों हाथ जोड़कर भगवान को प्रणाम किया और कृतज्ञता जतायी।

नास्तिक की नाराज़गी

शिवराम पक्का नास्तिक था। धान व सूद का व्यापार करके उसने लाखों रुपये कमाये। क्रमशः उसने बुढ़ापे में क़दम रखा। तबीयत बिगडती जा रही थी। इस दशा में चंद परिचित लोगों ने उसे सलाह दी, ''अब ही सही, अपनी नास्तिकता छोड़ो। देवभक्ति की आदत डालो। परलोक में सुखी रहने का प्रयत्न करो।''

खूब सोचने के बाद शिवराम को लगा कि उनकी सलाह में सत्य छिपा हुआ है। उसने उनसे कहा, ''इहलोक में सुख भोगा। अगर परलोक हो तो वहाँ भी बिना किसी बंधन के सुख भोगूँगा।'' यों कहकर वह मंदिर के पुजारी केशव से मिलने निकला।

केशव केवल एक साधारण पुजारी ही नहीं था, बल्कि आध्यात्मिक व धार्मिक विषयों का ज्ञाता भी था। जब शिवराम उससे मिलने आया तब वह मंदिर के चबूतरे पर बैठकर कोई ग्रंथ पढ़ रहा था।

शिवराम ने वहाँ आकर पुजारी को नमस्कार किया। तब आश्चर्य भरे स्वर में केशव ने कहा, ''कहीं रास्ता भूलकर तो यहाँ नहीं आ गये?''

शिवराम ने उसके पास आने का कारण बताया। चकित होते हुए पुजारी केशव ने कहा, ''ऐसी बात है क्या? तुम्हें लोगों से जो रक़म मिलती है, जो रक़म तुम्हें चुकानी है, क्या सब से निपट चुके?''

शिवराम ने नाराज़ होते हुए कहा, ''फ़ुरसत नहींहै, फिर भी आपसे भक्ति, आध्यात्मिक व धार्मिक विषय जानने आया हूँ। पर आप तो व्यापार को लेकर बातें करने लग गये! मेरे मूल्यवान समय को व्यर्थ कर रहे हैं। यह आपको शोभा नहीं देता।'' कहकर वह वहाँ से तुरंत चलता बना।

-केशव तंत्री

अराजकता

ब्रह्मदत्त काशी राज्य के शासक थे। उन दिनों में उत्तर पांचाल देश पर पांचाल नामक राजा राज्य करते थे। उनकी राजधानी कांपिल्य नगरी थी। राजा पांचाल भोग-लालसी और चरित्रहीन थे। साथ ही शासन के मामलों में रुचि नहीं लेते थे। 'यथा राजा तथा प्रजा' की कहावत के अनुसार राजा की देखादेखी मंत्री भी अनैतिक व्यवहार करने लगे। जनता पर करों का बोझ बढ़ता गया और देश में अराजकता सर उठाने लगी।

जनता का जीवन डाँवाडोल हो गया। दिन में राजभटों के अत्याचार और रात को चोरों के आतंक बढ़ने लगे। इसलिए नगरवासी अपने घरों पर ताले लगाकर दरवाजों पर कांटों के झाड़ रखे अपनी पत्नी व बच्चों को लेकर जंगल में चले जाते और इस तरह अपने प्राणों की रक्षा करने लगे। वे सारा दिन जंगल में बिताकर आधी रात के वक्त अपने घर लौट आते थे।

उन्हीं दिनों में बोधिसत्व ने नगर के बाहर तिंदक वृक्ष के अधिष्ठाता देवता के रूप में जन्म लिया। राजा हर साल उस पेड़ की पूजा करते और एक हज़ार मुद्राएँ इसके पीछे खर्च करते थे।

तिंदक देव सोचने लगे, 'ओह, ये राजा ऐसी श्रद्धा और भक्ति के साथ मेरी आराधनाकरते हैं। ये राजा अपनी अ दूरदर्शिता और अविवेक के कारण अपने देश में नाहक अराजकता मोल रहे हैं। इनको सही उपदेश मेरे सिवाय और को नहीं दे सकता।'

एक दिन सपने में राजा को दर्शन देकर तिंदक देव बोले, "राजन, मैं तिंदक देव हूँ! मैं आप को उपदेश देने आया हूँ।"

"कैसा उपदेश?" राजा ने विनयपूर्वक पूछा।

"राजन, आप शासन के कार्यों में दिलचस्पी नहीं ले रहे हैं। इस कारण आप का राज्य सर्वनाश को प्राप्त होनेवाला है! जो राजा शासन में दिलचस्पी नहीं लेते, वे इस लोक में अपने राज्य से वंचित हो जाते हैं और परलोक में नरक भोगते हैं।"

"हे देव! आप बताइये, मुझे क्या करना होगा?" राजा ने पूछा।

"अभी देरी नहीं हुई है। आप राज्य के कार्यों में खुद दिलचस्पी लेकर अराजकता को दूर कीजिए और अपने राज्य की रक्षा कीजिए।" यों समझाकर तिंदक देव अदृश्य हो गये।

इस पर राजा के मन में ज्ञानोदय हुआ। उन्होंने अपने राज्य की हालत खुद देखने का निश्चय किया। दूसरे दिन सवेरे अपने मंत्रियों को बुलाकर राजकाजों की देखभाल करने की सलाह दी और आप एक पुरोहित को साथ ले पूर्वी द्वार से छद्म वेष में निकल पड़े।

नगर के बाहर एक घर के सामने उन्हें एक वृद्ध दिखाई दिया। उसने दरवाजे पर ताला लगाया, घर के चारों तरफ़ कंटीले झाड़ फैला दिये। तब अपनी पत्नी व बच्चों के साथ जंगल में भाग गये। अंधेरा फैलने पर वह अपने घर लौट आया, किवाड़ खोलने को हुआ, तब उसके पैर में एक कांटा गड़ गया। उसी वक़्त वह जमीन पर लुढ़क पड़ा, पैर से कांटा निकालते हुए राजा की निंदा करने लगा, "जैसे मेरे तलवे में कांटा गड़ गया है, इसी प्रकार युद्ध के समय पांचाल राजा के बदन में तीर चुभ जाये!"

राजपुरोहित ने उस वृद्ध के समीप जाकर पूछा, "महाशय, आप तो वृद्ध हैं! आप की दृष्टि मंद है। इस कारण कांटों पर पैर रखा तो इसमें राजा का दोष क्या है?"

"राजा के अत्याचारी होने के कारण ही

अधिकारी दुष्ट हो गये हैं! जनता दिन में राजभटों के व रात को चोरों के अत्याचारों से तंग आ गई और घर के चारों तरफ़ कंटीले झाड़ फैलाकर अपने परिवार के साथ जंगल में भाग रही है। वरना मेरे पैर में कांटे के गड़ने की नौबत ही क्यों आती?'' वृद्ध ने कहा।

इसके बाद राजा और पुरोहित किस दूसरे गाँव में पहुँचे। वहाँ पर उन्हें एक औरत दिखाई दी। उसके दो विवाह योग्य कन्याएँ थीं। उन्हें वह जंगल में ले जाना नहीं चाहती थी, इसलिए घर के अंदर छिपाकर घर के लिए आवश्यक लकड़ियाँ वगैरह खुद लाया करती थी। उस वक़्त वह पत्ते तोड़ने के लिए पेड़ पर चढ़ गई, पैर फिसलने से नीचे गिरकर राजा को गालियाँ सुनाने लगी, ''इस देश का राजा मर जाये! इसके ज़िंदा रहते कन्याओं की शादी भी नहीं हो सकती।''

ये बातें सुन पुरोहित उस औरत के समीप पहुँचा और पूछा, ''अरी मूर्ख! क्या तुम समझती हो कि राज्य भर की कन्याओं के लिए पतियों का प्रबंध करना राजा की जिम्मेदारी है?''

''इस देश में दिन में राजभटों का और रात को चोरों का डर बना रहता है; ऐसी हालत में कन्याओं के लिए पति कैसे मिलेंगे?'' उस औरत ने जवाब दिया।

इसके बाद राजा और पुरोहित आगे बढ़े। एक जगह उन्हें खेत जोतते एक किसान दिखाई दिया। उसके खेत जोतते वक़्त हल के फाल के चुभने पर एक बैल नीचे गिर गया। इस पर वह किसान

गुस्से में आकर बोला, "पांचाल देश का राजा कलेजे में भाला चुभने से इसी तरह गिर जाये! हमारी सारी तक़लीफ़ें दूर हो जायेंगी!"

पुरोहित ने किसान से पूछा, "भाई, तुम्हारी असावधानी से बैल नीचे गिर जाय तो इसमें राजा का क्या दोष है?"

"राजा का दोष नहीं है तो किसका दोष है? राजा अगर अत्याचारी हो जाते हैं, तो हम जैसे कमज़ोर लोग कैसे ज़िंदा रह सकते हैं? दिन में राजभटों का डर और रात को चोरों का आतंक बना रहता है! मेरी औरत मेरे वास्ते जो खाना लाई थी, उसे दुष्ट लोग खा गये। मैं इस इंतज़ार में था कि मेरी औरत दुबारा खाना बनाकर कब ले आयेगी? इसलिए मेरे अंदर असावधानी आ गई और मेरा बैल चोट खाकर नीचे गिर गया है।" किसान ने जवाब दिया।

वहाँ से निकलकर राजा और पुरोहित राजधानी की ओर चल पड़े। रास्ते में उन्हें एक दृश्य दिखाई दिया। एक तालाब के जल में जीवित रहनेवाले मेंढकों को कौए नोच-नोचकर खा रहे थे। इस पर उन मेंढकों में से एक कह रहा था, "ये कौए जैसे हमें ज़िंदा रहते नोच-नोचकर खा रहे हैं, वैसे ही पांचाल राजा और उसकी संतान को दुश्मन नोचकर खा जाये।"

"अरे मूर्ख मेंढक! तुम लोगों को नोचकर खानेवाले कौओं की निंदा न करके राजा को शाप दे रहे हो?" पुरोहित ने मेंढक से पूछा।

"राजा को संतुष्ट करने के लिए पुरोहित यही पूछेगा! इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं है। लेकिन देश में काकश्राद्ध तक न होने की वजह ही तो कौओं की ज़िंदा मेंढकों को नोचकर खाने की हालत हो गई है। ऐसे देश के राजा के मरने पर देश का कैसा हित हो सकता है?" मेंढक बोला।

यह सुनकर राजा अपने पुरोहित से बोले, "आखिर मेंढक भी मुझे शाप दे रहे हैं। अब राजधानी लौटकर अराजकता को दूर भगा देंगे।"

इसके बाद राजा ने शासन के कार्यों में दिलचस्पी ली। राज्य की व्यवस्था की त्रुटियों को दूर किया। जनता को शांति और सुख देते हुए बहुत समय तक राज्य किया।

रामायण

पुष्कर में विश्वामित्र ने जो तपस्या की, उससे सन्तुष्ट होकर ब्रह्मा प्रत्यक्ष हुए और उन्होंने उनको ऋषि की उपाधि दी।

विश्वामित्र उससे भी सन्तुष्ट न हुए। उन्होंने और कठोर तपस्या करनी प्रारम्भ की। उस समय उनको मेनका नामक अप्सरा दिखाई दी। उसको देखकर उनका मन विचलित हो उठा। प्राणिक सुख की लालसा जाग गई। मन के अन्धेरे कोने में छिपी कामनाएँ चीत्कार कर उठीं। तपस का शुष्क जीवन नीरस लगने लगा। हृदय में दबा पड़ा असन्तुष्ट प्रेम-भाव विद्रोह कर उठा। हृदय-केन्द्र में परम सत्ता के ध्यान के बदले बार-बार मेनका का चित्र सामने आने लगा। वे अपनी तपस्या भूल गये। विश्वामित्र मेनका को अपने आश्रम में ले गये। उसके साथ उन्होंने दस साल सुख से बिताये। जब उनको अपनी भूल मालूम हुई तब उन्होंने सोचा कि मेरी तपस्या भंग करने के लिए देवताओं ने मेनका को भेजा है।

उनमें परिवर्तन देखकर मेनका ने सोचा कि कहीं ऐसा न हो कि विश्वामित्र उसको शाप दे दें। परन्तु विश्वामित्र ने उससे केवल इतना कहा, ''इसमें तुम्हारा कोई दोष नहीं है। दोष सारा मेरा है। मैं अपने संकल्प की दुर्बलता के कारण ही लक्ष्य से भटक गया और पतन के गह्वर में गिर पड़ा। मैं अपने मन और इन्द्रियों पर संयम न रख सका। अब मैं जाग्रत हूँ। मेरी उदात्त चेतना लौट आई है। मेरा लक्ष्य मुझे धिक्कार रहा है और मैं पुनः तपस्या करने जा रहा हूँ। अब तुम चले जाओ।''

इसके बाद वे उत्तर दिशा की ओर चल पड़े।

हिमालय में कौशिकी नदी के किनारे रहते हुए उन्होंने बड़ी कठिन तपस्या की। आखिर ब्रह्मा के साथ देवता आये। उन्होंने उनको महर्षि की उपाधि दी।

विश्वामित्र ने ब्रह्मा से पूछा, ''क्या अब मैं जितेन्द्रिय हो गया हूँ?''

''अभी तुम जितेन्द्रिय नहीं हुए हो।'' ब्रह्मा ने कहा। जितेन्द्रिय होने के लिए वायु भक्षण करते हुए विश्वामित्र ने घोर तपस्या की। उनकी इस कठोर तपस्या को देख इन्द्र और देवताओं को भय हुआ।

इन्द्र ने रम्भा को बुलाकर कहा, ''तुम जाकर विश्वामित्र की तपस्या भंग करो। मैं भी मन्मथ को लेकर तुम्हारी सहायता के लिये आऊँगा। मैं कोयल के रूप में आऊँगा।''

जब विश्वामित्र तपस्या में लीन थे तब कोयल की कूक सुनाई दी। जब उन्होंने आँखें खोलीं तो सामने रम्भा थी। यह सोचकर कि यह सब देवताओं की चाल है, विश्वामित्र ने उसको शाप दे दिया कि वह पत्थर हो जाये। इन्द्र और मन्मथ भाग गये।

तुरंत विश्वामित्र को पश्चात्ताप हुआ, ''अरे अरे! मैंने क्यों शाप दे दिया? कोप का मैं संयम क्यों न कर सका? मैं एक बार फिर देवताओं के जाल में फँस गया। पहले कामना ने मुझे छला और अब क्रोध का शिकार हो गया। क्षण भर में, मेरी युगों की तपस्या क्षीण हो गई। मुझे हर हालत में गंभीर और शान्त रहना होगा। चाहे कामनाओं की झंझा हो या क्रोधाग्नि की लपटें, मुझे स्थिर अविचल रहना सीखना होगा। तभी मैं ब्रह्मर्षि बन पाऊँगा।'' उन्होंने प्रतिज्ञा कर ली कि चाहे कोई कुछ करे वे क्रुद्ध न होंगे। तप से उन्होंने ब्राह्मणत्व को पाने का निश्चय कर लिया।

इस उद्देश्य से वे उत्तर प्रदेश को छोड़कर पूर्व की ओर गये। मौनव्रत धारण करके उन्होंने अपनी तपस्या जारी रखी। उस तपस्या की ऊष्णता से तीनों लोक दग्ध से हो गये। देवताओं ने जाकर ब्रह्मा से प्रार्थना की। ब्रह्मा ने आकर विश्वामित्र से कहा, ''ब्रह्मर्षि, अब तुम में ब्राह्मणत्व आ गया है।''

विश्वामित्र ने कहा, ''मैं तभी सन्तुष्ट होऊँगा, जब वसिष्ठ मुझे ब्राह्मण मानेंगे।'' देवताओं ने वसिष्ठ से भी विश्वामित्र को ब्रह्मर्षि स्वीकार

करवाया। वसिष्ठ और विश्वामित्र का कलह समाप्त हुआ और उनमें स्नेहपूर्ण सम्बन्ध स्थापित हुए।

इस तरह शतानन्द ने विश्वामित्र की कहानी जब समाप्त की तो सूर्यास्त हो गया था। जनक महाराजा विश्वामित्र के आगमन पर अपना हर्ष प्रकट करके चले गये। अगले दिन सवेरे उन्होंने विश्वामित्र, राम और लक्ष्मण को निमन्त्रित किया।

जनक ने उस धनुष के बारे में विश्वामित्र से कहा जो उनके पास था। दक्ष-यज्ञ के समय शिव ने उस धनुष से देवताओं को मारना चाहा था। आखिर उनकी विनती सुनकर उन्होंने यह धनुष देवताओं को ही दे दिया।तब से वह धनुष उनके वंश में ही चला आ रहा था। न उसे कोई उठा सकता था, न कोई हिला ही सकता था।

जब एक बार जनक यज्ञ के लिए भूमि में हल चला रहे थे, तब भूमि में से एक लड़की निकली। जनक ने उसका नाम सीता रखा। उसको वे अपनी लड़की की तरह पालने-पोसने लगे। उन्होंने निश्चय किया कि जो कोई शिव का धनुष उठायेगा, उसके साथ वे सीता का विवाह कर देंगे। यह जानकर कितने ही राजकुमार दूर-दूर देश से आये। उन्होंने शिव धनुष उठाने की कोशिश भी की। पर कोई भी उस धनुष को न उठा सका।

आखिर उन राजाओं ने, जो हार गय े थे, मिलकर मिथिला पर आक्रमण किया और उसको एक साल तक घेरे रखा। जनक को न सूझा कि क्या करें। उन्होंने देवताओं से प्रार्थना की।
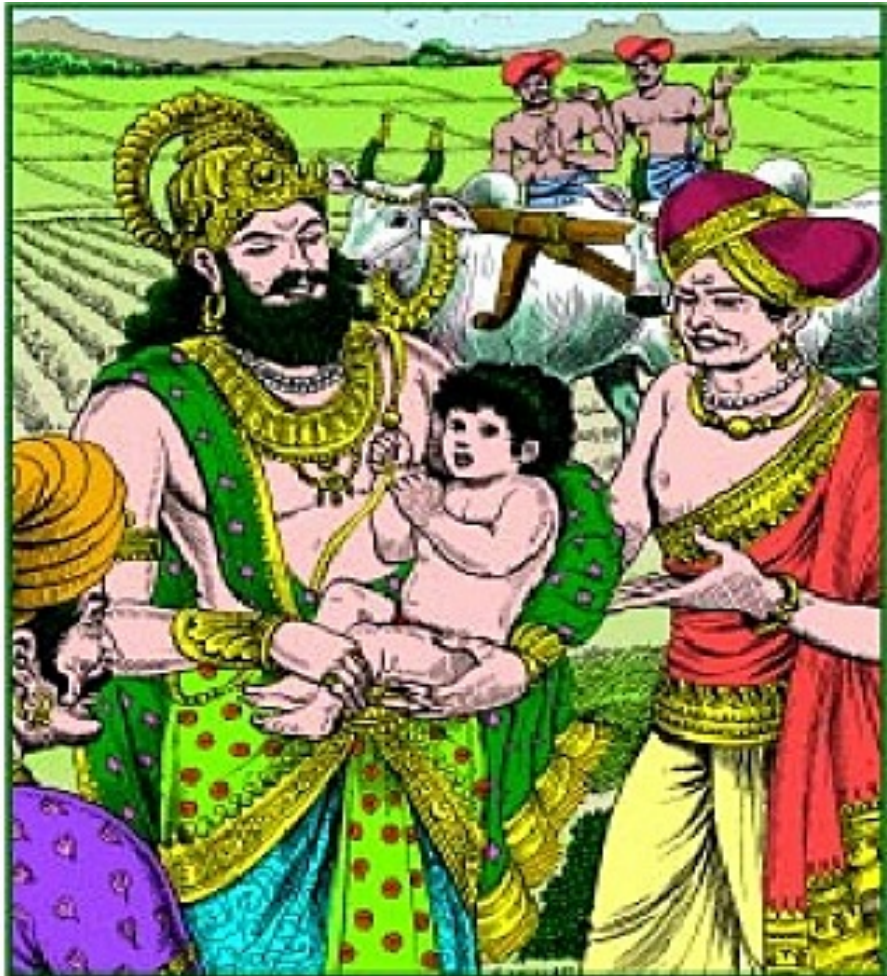
देवताओं ने आकर उन राजाओं और राजकुमारों को भगाया।

यह वृत्तान्त सुनकर विश्वामित्र ने उस धनुष को राम को दिखाने के लिये कहा। उसको लाने के लिये जनक ने लोगों को नगर में भेजा। आठ चक्रों पर रखे लोहे के सन्दूक में वह धनुष रखा हुआ था। उसे यज्ञशाला के पास लाया गया।

''देखूँ तो मैं उसे उठा सकता हूँ कि नहीं, इस पर बाण चढ़ा सकता हूँ कि नहीं?'' कहते हुए राम ने सन्दूक खोला। धनुष का मध्य भा ग पकड़कर उसे ऊपर उठाया और उस पर प्रत्यंचा भी चढ़ा दी। जब उन्होंने उस पर बाण चढ़ाने का प्रयत्न किया तो विद्युद्ध्वनि सी हुईऔर धनुष बीच में टूट गया। सब चकित रह गये।

जनक को परम आनन्द हुआ। ''मैंने सोचा

था कि सीता का विवाह किसी शौर्यवान से ही करूँगा। यह लड़का सीता के योग्य है। इन दोनों के विवाह के बारे में मैं अभी अयोध्या खबर भेजूँगा।''

जनक के दूतों ने तीन दिनों तक यात्रा की। चौथे दिन प्रातःकाल अयोध्या पहुँचे। उन्होंने दशरथ से धनुर्भंग के बारे में कहा और निवेदन किया कि वे विवाह केलिये प्रस्थान करें। दशरथ बड़े खुश हुए।

उन्होंने मन्त्रियों के साथ विचार-विमर्श किया। उन्होंने निर्णय किया कि जनक के परिवार से विवाह सम्बन्ध स्थापित करना उचित है। वसिष्ठ, नामदेव, जाबाली, काश्यप, मार्कण्डेय आदि ऋषि पहले चले गये। दशरथ अपनी सेना लेकर बाद में फिर निकले। चार दिन बाद वे जनक की यज्ञशाला में पहुँचे। तब तक यज्ञ समाप्त हो चुके थे और विवाह की औपचारिकताएँ पूरी करके सीता को वधू भी बनाया जा चुका था।

जनक और दशरथ एक जगह आये। जनक के साथ उनका भाई कुशध्वज भी था। दशरथ की ओर से वसिष्ठ ने राजा जनक को दशरथ की वंशावली के बारे में पूरी जानकारी दी। राजा जनक ने अपने वंश के बारे में स्वयं दशरथ को बताया।

दोनों ही उच्च वंश के थे। दोनों ही समधी हो सकते थे। जनक की सीता के अतिरिक्त एक और लड़की थी। उसका नाम था ऊर्मिला। उनके भाई के भी दो लड़कियाँ थीं, उनका नाम था माण्डवी और श्रुतकीर्ति। सीता और राम के विवाह के समय जनक ने सूचित किया कि अच्छा होगा यदि लक्ष्मण का ऊर्मिला के साथ, माण्डवी का

भरत के साथ, श्रुतकीर्ति का शत्रुघ्न के साथ विवाह हो। उत्तर फाल्गुनी नक्षत्र में विवाह निश्चित हुआ।

विवाह से पहले दशरथ ने चार लाख गौवें दान में दीं। उसी दिन भरत का मामा युधाचित भी मिथिला में आया। अग्नि के समक्ष चारों का विवाह हुआ।

विवाह होते ही विश्वामित्र हिमालय चले गये। दशरथ भी अपनी सेना के साथ अयोध्या के लिए निकले। वे सप्ताह भर यात्रा करते रहे। एक दिन अचानक अन्धेरा हो गया, धूल उठी। फिर ठंडी ठंडी हवा चलने लगी। उस समय रौ द्र परशुराम प्रलय की तरह उनके सामने उपस्थित हुए। उनके कन्धे पर फरसा था और हाथ में चमचमाते धनुष और बाण। परशुराम को मालूम हो चुका था कि शिवधनुष भंग हो चुका है। वे क्रोध से काँपते हुए राम से मिलने ही जा रहे थे। तभी राम से भेंट हो गई।

परशुराम ने राम से कहा, ''राम, सुना है कि तुमने शिव का धनुष तोड़ दिया है। सुना है बड़े होशियार हो, देखें तो इस विष्णु के धनुष पर बाण चढ़ा पाते हो कि नहीं। यदि तुम में इतनी शक्ति है तो मुझ से द्वन्द्व युद्ध करो।''

परशुराम ने विष्णु के धनुष के बारे में राम से इस प्रकार कहा, ''इसको भी विश्वकर्मा ने स्वयं बनाया था। इसे देवताओं ने विष्णु को दिया था। शिव और विष्णु के बल को आजमाने के लिए उन्होंने उन दोनों में युद्ध करवाया। दोनों के पास

एक एक बड़ा धनुष था। उनमें भयंकर युद्ध हुआ। उनमें विष्णु ही विजयी होता-सा लगा। यह जानकर कि शिव और केशव में केशव ही अधिक बलवान हैं, देवताओं ने दोनोंसे युद्ध समाप्त करने की प्रार्थना की। क्योंकि विष्णु को उससे अधिक बलशाली बताया गया था, इसलिए शिव ने क्रुद्ध होकर अपने धनुष और बाण को विदेह देश के राजा देवरात को दे दिया।

विष्णु ने अपना धनुष भृगु वंश के ऋचीत के पास रख छोड़ा। वह बाद में ऋचीत के लड़के जमदग्नि को मिला। फिर उनके बाद परशुराम को।

दशरथ परशुराम के रौद्ररूप को देखकर भयभीत हो काँपने लगे। उन्होंने परशुराम के पैरों पर पड़कर कहा, ''स्वामी, इक्कीस बार क्षत्रियों का संहार करने के बाद आपने इन्द्र के सामने प्रतिज्ञा की थी कि फिर अस्त्र नहीं पकड़ेंगे। अब मेरे पुत्र की रक्षा करो। नहीं तो हमारे वंश का सर्वनाश हो जायेगा।'' इतना कहकर किसी अशुभ की आशंका से दशरथ मूर्छित हो गये।

परशुराम ने उनकी बातों को अनसुना कर दिया। तब राम क्रुद्ध हो उठे। उन्होंने परशुराम के हाथ से वह धनुष ले लिया।

उस पर बाण चढ़ाकर कहा, ''अरे ब्राह्मण, मैं इस बाण से तुम्हारे प्राण ले सकता हूँ। परन्तु ब्राह्मण की हत्या करना मुझे पसन्द नहीं है। तो क्या इससे तुम्हारे पैर तोड़ दूँ? क्या मैं उन लोकों को ध्वंस कर दूँ, जहाँ तुमने तपस्या की थी?'' परशुराम निश्शक्त हो गये और महेन्द्रगिरि चले गये। राम ने अपने मूर्छित पिता को उठाया। उनको साथ लेकर वे अयोध्या पहुँचे।

कुछ दिन बीत गये। युधाचित ने अपने भांजे भरत को अपने घर ले जाने की अनुमति माँगी। दशरथ इसके लिए मान गये। भरत और शत्रुघ्न अपने मामा के साथ चले गये।

सीता और राम बड़े प्रेम के साथ ग्रहस्थ्य जीवन का निर्वाह कर रहे थे। वे अपना प्रेम बाह्य रूप से व्यक्त नहीं कर रहे थे। पर वे एक दूसरे को खूब समझ रहे थे। राम राज-कार्य में पिता की सहायता कर रहे थे। दिन सुखपूर्वक कट रहे थे।

(बालकाण्ड समाप्त)

राजकुमारी लवंगलता

पूर्वी समुद्र के बीच सुवर्ण द्वीप नामक एक टापू था। उसके राजा धीमान की पुत्री लवंगलता न केवल सुंदर थी, बल्कि नृत्य, संगीत, चित्रकला और इंद्रजाल विद्या में भी निपुण थी। जब वह विवाह के योग्य हुई तब राजा धीमान के सर पर चिंता सवार हो गई।

राजा धीमान ने लवंगलता के स्वयंवर का प्रबंध किया। अनेक देशों के राजा और राजकुमार उस स्वयंवर में आये, पर लवंगलता ने उनमें से किसी को पसंद नहीं किया। राजा धीमान ने विस्मय में आकर राजकुमारी से पूछा, ''इतने सारे राजे और राजकुमारों में से क्या तुम्हें कोई भी पसंद न आया? तुम अपने मन की बात साफ़-साफ़ बतला दो।''

इस पर राजकुमारी लजाते हुए बोली-''कहा जाता है कि रत्न द्वीप का राजा शशांक सुंदर, साहसी और बुद्धिमान हैं। मेरी सहेलियों का विचार है कि शशांक ही मेरे लिए योग्य वर है।''

''यह बात तुम पहले ही बतला देती!'' ये शब्द कहकर राजा ने मंत्री के साथ मंत्रणा की। सुवर्ण द्वीप से रत्न द्वीप पहुँचने में समुद्री मार्ग से तीन महीने लगते थे।

मंत्री ने सलाह दी, ''इस विवाह के संबंध में शशांक का विचार जानने के लिए उनके पास एक दूत के हाथ हम राजकुमारी का चित्र तथा डाकवाले कबूतर भी भेज देंगे जिससे हमें शशांक का विचार शीघ्र ही मालूम हो जाएगा।''

मंत्री के सुझाव के अनुसार राजा धीमान की ओर से एक दूत उपहारों के साथ रत्न द्वीप के लिए चल पड़ा। उसके रवाना होने के पचास दिन बाद कबूतर समाचार ले आये। समाचार था कि राजा शशांक राजकीय कार्यों में व्यस्त है, इसलिए उसका सुवर्ण द्वीप में आना फिलहाल संभव नहीं है, यदि लवंगलता रत्न द्वीप आ जाये तो उचित

२५-वर्ष पूर्व चन्दामामा में प्रकाशित कहानी

निर्णय लिया जा सकता है।

बधू को बर के यहाँ बिबाह के पूर्ब भेजना रीति-रिवाज़ के बिरुद्ध था, फिर भी राजा धीमान उस नियम को तोड़ने के लिए तैयार हो गया। राजा ने एक बड़ी नाब में अमूल्य उपहार भरबा दिये, और राजकुमारी लबंगलता के साथ अपने पुरोहित को भी रत्न द्बीप भेज दिया।

एक महीना बीत गया। रत्न द्बीप निकट आ गया था। तभी एक दिन रात को उस नाब को समुद्री डाकुओं ने घेर लिया। सुबर्ण द्बीप के भटों ने साहस के साथ उनका सामना किया, फिर भी कोई फ़ायदा न रहा। समुद्री युद्ध में कुशलता प्राप्त डाकू नौका पर आने लगे।

लबंगलता ने ख़तरे को भाँप लिया । उसने सारे शरीर में काला रंग पोत लिया। उसने जो रंग पोत लिया था, बह पंद्रह दिन तक छूटनेबाला न था। अपने लंबे केशों को काट लिया। इसके बाद नाबिक की पोशाकें पहन लीं। फिर राजगुरु के साथ बह भी रस्सों के ढेर के पीछे छिप गई। समुद्री डाकुओं ने नाब को लूट लिया, नाब से निकलते बक़्त नौका के निचले भाग में एक छेद बनाया, तब बे भाग गये। नाब समुद्र में डूब गई।

नाब पर एक छोटी-सी डोंगी थी। नाब में सभी लोग मर गये थे, पर दो नाबिक बेहोशी की हालत में जीबित थे। बे होश में आने पर लबंगलता और राजपुरोहित के साथ उस डोंगी से तीन दिन बाद रत्न द्बीप पहुँचे।

लबंगलता और राजगुरु अपने दो नाबिकों को साथ ले राजधानी में जा रहे थे। रास्ते में राजा की धोबिन से उनकी मुलाक़ात हुई। उनका पूरा समाचार जानकर धोबिन ने उन्हें अपने घर आने का निमंत्रण दिया और कहा कि उनके कार्य के पूरा होने तक बे उसी के घर रहें। लबंगलता ने धोबिन के निमंत्रण को स्बीकार कर लिया।

उसी दिन राजगुरु ने रत्न द्बीप के राजा शशांक से मिलकर लबंगलता के आने का समाचार दिया। शशांक ने एक पालकी भेजकर लबंगलता को राजमहल में बुलबा लिया। धोबिन ने अपने यहाँ के बढ़िया बस्त्र राजकुमारी को दिये। उन बस्त्रों को धारण कर लबंगलता शशांक को देखने गई। पर शशांक लबंगलता को दे ख बिमुख हो गया। बह यक़ीन न कर पाया कि राजबंश में काले-कलूटे लोग भी पैदा हो सकते हैं। उसे कोई

दगाबाजिन समझकर वापस भेज दिया। लवंगलता निराश हो धोबिन के घर लौट गई।

धोबिन ने राजकुमारी को सांत्वना दी। धोबिन एक मालिन को जानती थी। उसके पास केशों को शीघ्र बढ़ानेवाला एक तेल था। पंद्रह दिनों में लवंगलता का कालापन दूर किया जा सकता था और उसके केश भी बढ़ाये जा सकते थे।

राजमहल के लिए फूल-मालाएँ तैयार करनेवाली सुरमा ने पंद्रह दिनों में लवंगलता को पहले की भाँति तैयार किया। मगर उसे राजा शशांक के यहाँ कैसे भेजा जाये?

इसके लिए लवंगलता ने एक उपाय किया। वह फूल-मालाएँ गूँथने में बड़ी कुशल थी। उसने राजा शशांक के वास्ते एक विशेष प्रकार की माला तैयार की और सुरमा के द्वारा उसे राजा के पास भेज दिया। उसे देख शशांक आश्चर्य में आ गया और बोला, ''आज तक तुमने कभी ऐसी सुंदर माला नहीं गूँथी है।''

''महाराज! यह माला मैंने नहीं एक युवती ने विशेष रूप से आपके वास्ते गूँथी है। इसे आप ही को धारण करना होगा।'' सुरमा ने कहा।

''यह माला तैयार करनेवाली युवती को क्या तुम मेरे पास भेज सकती हो? वह यह माला कैसे गूँथती है? मैं देखना चाहता हूँ।'' राजा ने जिज्ञासा प्रकट की।

''महाराज! आप चकित हो जायेंगे। वह युवती एक थाल में से फूल लेकर आप का नाम लेते हुए उन पर फूँक लगाती है, तब उन फूलों को एक पात्र में डालकर उसमें से एक माला बाहर निकालती है। इस प्रकार तैयार हुई मालाएँ केवल आप के लिए होती हैं।'' सुरमा ने कहा।

''यह तो बड़ी ही आश्चर्य की बात है! मैं उस युवती को एक बार ज़रूर देखना चाहूँगा। क्या तुम उसे एक दिन बुला सकती हो?'' राजा शशांक ने पूछा।

सुरमा ने घर लौटकर लवंगलता से कहा, ''राजकुमारी, मेरी चाल चल निकली।'' इसके बाद लवंगलता ने चमेली के फूल मँगवाये, उनमें से आधे फूल लेकर एक माला गूँथ ली। बाक़ी फूलों को एक थाली में रख दिया। इसके बाद माला को बायीं हथेली पर रखकर उस पर फूलों की थाली इस तरह रख दी जिससे माला दिखाई न पड़े। तब राजमहल की ओर चल पड़ी। उस

वक़्त राजकुमारी ने वे ही वस्त्र धारण किये जो पालकी में जाते समय पहन चुकी थी।

लवंगलता की ओर शशांक ने इस प्रकार दृष्टि दौड़ाई, मानो वह उसे पसंद आ गई। लवंगलता ने भी राजसी वृत्ति के साथ वार्तालाप किया।

''तुम मालाएँ कैसे गूँथती हो, दिखाओ तो सही?'' शशांक ने पूछा।

''मालाओं की सृष्टि करने की शक्ति मुझमें नहीं है, भगवान ही मेरे वास्ते मालाएँ तैयार करते हैं। वह भी केवल उस व्यक्ति की माँग पर जिसे मैं हृदय से चाहती हूँ।'' लवंगलता ने उत्तर दिया।

''क्या तुम मेरे वास्ते एक माला तैयार न कर सकोगी?'' शशांक के मंत्री ने पूछा।

''क्षमा कीजिएगा। यह मुझसे नहीं हो सकेगा। भगवान मेरे हृदय को जानते हैं। वे उसी व्यक्ति के वास्ते माला की सृष्टि करते हैं जिसे मैं हृदय से प्यार करती हूँ।'' लवंगलता ने उत्तर दिया।

''तो क्या तुम मुझे हृदय से प्यार करती हो?'' शशांक ने पूछा।

''यह तो भगवान का निर्णय है। यह गलत कैसे हो सकता है?'' लवंगलता ने कहा।

''तब तो तुम साबित करो कि यह भगवान का निर्णय है।'' शशांक ने कहा।

इस पर लवंगलता ने अपने बायें हाथ की फूलों की थाली शशांक को दिखाई। उसमें चमेली के फूल थे जो गूँथे हुए न थे। इसके बाद लवंगलता ने शशांक से कहकर चाँदी का एक बड़ा पात्र मँगवाया। थाली में से फूल उसमें गिराते हुए थाली के नीचे गुप्त रूप से छिपाई गई माला को भी उस पात्र में गिरा दिया।

इसके बाद पात्र में अन्य फूलों के साथ माला भी दिखाई दी। लवंगलता ने उस माला को शशांक के कंठ में पहना दिया। शशांक ने मन में कहा, 'चित्र की अपेक्षा यह युवती ज़्यादा सुंदर है।' फिर प्रकट रूप में बोला, ''इन बचे हुए फूलों का क्या होगा।''

''महाराज! आप क्षण-भर रुक जायें तो मैं इनकी माला गूंथ दूँगी।'' सुरमा बोली।

सुरमा के माला गूँथने पर उस माला को शशांक ने लवंगलता के कंठ में पहना दिया।

चित्र: राजेश 4

अपराजेय गरुड़

आदित्य राज्याभिषेक में गड़बड़ी पैदा
करने की आदिवासियों की चालों को जानने के लिए उत्सुक है।
वह वृद्ध रामसिंह को आदिवासियों की बस्ती में भेजता है।
एक आदिवासी दम्पति आदित्य को खबर देता है कि
महल का कोई व्यक्ति बन्दी बना लिया गया है।

आदित्य सादा लिबास पहन लेता है और ललाट का चिह्न मिटा देता है।

मैं आसानी से
पहचान में नहीं आऊँगा।

वह गरुड़ की प्रतिमा के सामने ध्यान करता है। वह प्रतिमा के निकट रखे पंख से अपने चेहरे को स्पर्श करता है।

हे प्रभु! मुझे
राजगुरु के आदेश का
उल्लंघन करना होगा।
मैं लाचार हूँ।

आदित्य महल के सामने के प्रांगण तक चल कर जाता है।

प्रांगण में पहले से तैयार घोड़े पर सवार होता है। वह अपने व्यक्तिगत अंगरक्षक को सिर हिलाकर सहमति देता है।

आदित्य तेजी से आदिवासी बस्ती में पहुँचता है, जहाँ उसने रामसिंह को खबर लाने के लिए भेजा है।

रामसिंह का कहीं पता नहीं है। लेकिन पहाड़ी क्षेत्र में...
कोई पेड़ से बंधा हुआ है! और दो पहरेदार?
आदित्य बन्दी के पास जाता है। उसका अनुमान सही निकला।
रामसिंह! मुझे जल्दी करना होगाः
मैं हूँ रामसिंह! शोर नहीं मचाना।
तुम्हें बन्दी बनानेवाले आ रहे हैं। जल्दी करो! मेरा घोड़ा ले लो और जाओ और कुछ आदमियों को लेकर आओ।
आप का क्या होगा, महानुभाव!
आदिवासी जाल फेंकते हैं। आदित्य अनजाने में पकड़ा जाता है।
तुम कौन हो? महल का आदमी कहाँ है?
आदिवासी कुछ पत्तियाँ मल कर आदित्य को बलपूर्वक सुंघाते हैं।
अब देखो मज़ा!
आह! मुझे छोड़ दो! मैं...
आदित्य मूर्छित होकर गिर पड़ता है!
वह कुछ देर तक नहीं उठेगा।
चलो, हम अपने सरदार को बुलाकर लाते हैं। वही बतायेगा कि इसके साथ क्या व्यवहार करें।

रामसिंह घोड़ों और अंगरक्षकों के साथ वापस आता है।
महानुभाव! आप ठीक तो हैं! आदिवासियों ने परेशान तो नहीं किया? लेकिन वे किधर गये?
उन्होंने मुझे कुछ पत्तियाँ सुंघा दीं। मैं बेहोश हो गया। चलो, हमलोग उनके आने से पहले भाग चलें।
वापस अपने निवास स्थान पर...
रामसिंह, अब बताओ, कोई समाचार मिला?
मैंने कुछ लोगों को एक छप्पर डालते देखा। मैं उनमें शामिल होकर उनकी बात सुनने लगा। जब मैंने राज्याभिषेक शब्द सुना तो पूछा, ''किसका राज्याभिषेक?'' मानो मैं कोई बाहरी आदमी हूँ।
तब क्या हुआ?
अचानक लगा किसी ने मुझे पहचान लिया। ''क्या तुम महल के आदमी नहीं हो?'' वे सब मुझे घेरकर ढेर सारे प्रश्न करने लगे। लेकिन मैं बाहरी आदमी की तरह ही बात करता रहा। उन्होंने मेरी आँखों पर पट्टी बाँध दी और बहुत देर तक चलाया। मैंने एक परिचित आवाज सुनी।
वह कौन था? अनुमान करो।

मैंने सोचा, वह रवीन्द्रदेव होगा।
वह आदिवासियों को मेरा सिर काटकर और राज्याभिषेक के अवसर पर आदित्य को भेंट स्वरूप देने के लिए कह रहा था।
मेरा अनुमान भी सही है।
लेकिन हमें ऐसी घटनाओं को रोकना होगा।
मैंने बलिदानों की चर्चा और किसी को शारीरिक अंग मिल जाने से सम्बन्धित चमत्कार के बारे में भी सुना। महानुभाव! यदि आप स्वीकृति दें तो मैं राजा को जाकर यह खबर सुनाता हूँ। निस्सन्देह, मैं विस्तृत विवरण नहीं दूँगा ताकि वे परेशान न हो जायें।
किसी को नया अंग मिलेगा? यह केवल नरेन्द्रदेव हो सकता है।
हाँ, रामसिंह, राजा और अरुणा को विस्तृत जानकारी देने की जरूरत नहीं है।
दूसरे दिन आदित्य राजा से मिलता है।
तुमने रामसिंह को आदिवासियों से बचाया। लेकिन आदित्य, इसमें जोखिम था।
राजगुरु ने तुम्हें अनुष्ठानों के बारे में याद दिलाया है।
अच्छा तो ये मेरी दुर्घटना के बारे में नहीं जानते!
(क्रमशः)

शान्त उल्लास का पर्व

बैसाख की पूर्णिमा (अप्रैल-मई) बौद्ध धर्म के अनुयायियों के लिए एक बहुत बड़ा अवसर है, क्यों कि इसी दिन बुद्ध राजकुमार गौतम के रूप में पैदा हुए थे, इसी दिन इन्हें ज्ञान मिला था और इसी दिन इन्हें निर्वाण भी प्राप्त हुआ था। बौद्ध धर्मावलम्बी श्रीलंका, म्यानमार, थाईलैण्ड, तिब्बत, चीन, कोरिया, लाओस, वियतनाम, मंगोलिया, भूटान, कम्बोडिया तथा जापान में फैले हुए हैं, जहाँ पर्वोत्सव का वातावरण व्याप्त है। भारत में, जो भी हो, न तो तड़क भड़क है और न बेफिक्री। बौद्ध इस दिन को शान्तिपूर्ण उल्लास के साथ मनाते हैं। वे श्वेत वस्त्र धारण करते हैं और बिहारों में जाते हैं, जहाँ सामान्य पूजापाठ के अतिरिक्त बौद्ध शास्त्रों से पाठ किये जाते हैं। समारोह का मुख्य केन्द्र बिहार का बोध गया है, जहाँ अभी भी बोधि वृक्ष है, जिसके नीचे बुद्ध को ज्ञान प्राप्त हुआ था, और इसके पास ही महाबोधि मन्दिर है जो रंगीन झंडियों और फूलों से सजाया गया है। इस वर्ष बुद्ध पूर्णिमा १३ मई को पड़ती है।

मई महीने में सिक्किम में एक अन्तर्राष्ट्रीय पुष्प पर्वोत्सव माया जा रहा है और तमिलनाडु के ऊटी में एक महीने तक ग्रीष्म पर्वोत्सव मनाया जायेगा। पेड़-पौधों के लिए प्रसिद्ध सिक्किम का छोटा राज्य गर्मी के महीनों में पूरे बहार पर रहता है जहाँ ऑर्किड की ६०० जातियाँ, ग्लेडियोली की १५० किस्में, रोडोडेन्ड्रन्स के लगभग ५० प्रकार और मॅग्नोलिया के कुछ प्रभेद पाये जाते हैं। मई में भिन्न-भिन्न केन्द्रों में पुष्प प्रदर्शनियाँ लगाई जाती हैं।

ऊटी में इस वर्ष मई में ११० वीं पुष्प प्रदर्शनी आयोजित की जायेगी, जब सरकारी वानस्पतिक उद्यानों में रंगों की धूम मचेगी। इसमें ६५० किस्म के पौधे हैं जिनमें भारत का एक मात्र कार्क वृक्ष, पेपर बार्क वृक्ष और एक मंकी पज़ल वृक्ष जिसपर बन्दर नहीं चढ़ सकते, शामिल हैं। पुष्प प्रदर्शनी ग्रीष्म पर्वोत्सव का गौरव है।

आप के पन्ने आप के पन्ने

तुम्हारे लिए विज्ञान

नील ग्रह

देखने में नेपट्यून ग्रह यूरेनस के काफी समान लगता है। दोनों नीले हरे गैस की गेंद की तरह लगते हैं। जो भी हो, नेपट्यून का नाम समुद्र के रोमन देवता पर दिया गया, क्योंकि देखने में, यह जलमय लगता है। कहा जाता है कि इसका नीला रंग इसके वातावरण में उपस्थित मेथन द्वारा लाल प्रकाश के शोषण कर लिये जाने के कारण दिखाई पड़ता है।

इसका आविष्कार बर्लिन वेधशाला के जोहन गौटफ्राइड द्वारा २३ सितम्बर १८४६ को किया गया था।

इसकी सतह पर बड़े-बड़े काले वृत हैं। खगोल शास्त्रियों का विश्वास है कि वे झंझावात हैं। यह ग्रह चार वृतों से घिरा हुआ है। इनमें से दो वृत पतले हैं और अन्य दो मोटे हैं।

नेपट्यून के आठ चन्द्रमा हैं। इनमें से चार बलय के घेरे के अन्दर घूमते हैं इसका एक चन्द्रमा ट्रायटन अन्य सातों से बिलकुल भिन्न है। यह ग्रह के चारों ओर अन्य चन्द्रमाओं की विपरीत दिशा में घूमता है।

सूर्य से नेपट्यून की दूरी लगभग ४.५०१ बिलियन कि.मी. है।

तुम्हारा प्रतिवेश

उपग्रह टेलिविज़न

टेलिविज़न के विरुद्ध एक आम शिकायत यह है कि यह बच्चों का ध्यान पढ़ाई-लिखाई से अलग कर देता है। इस पर जो भी आरोप हो, टेलिविजन हमारे जीवन का एक अविभाज्य अंग बन गया है। क्या कभी तुमने सोचा है कि उपग्रह टेलिविजन कैसे काम करता है?

टेलिविजन पृथ्वी की सतह पर एक बड़े क्षेत्र में अपने कार्यक्रम को प्रसारित करने के लिए कृत्रिम उपग्रह का प्रयोग करता है।

उपग्रह छोटा होता है और दुनिया भर के टी.वी.सेट्स को संकेत भेजने के लिए प्रयुक्त किया जा सकता है। भूस्थावर उपग्रह पृथ्वी की गति से घूमता है, इसलिए यह स्थिर दिखाई पड़ता है। फिर भी, इसका संकेन्द्रण पृथ्वी की सतह के एक खास क्षेत्र पर स्थिर रहता है।

आप के पन्ने आप के पन्ने

क्या तुम जानते थे?

रेतीले तथ्य

विश्वास करो या न करो। समुद्र तट पर एकत्र रेत वास्तव में चट्टान है। सैकड़ों वर्षों तक प्राकृतिक तत्वों से घिसते और क्षरित होते रहने के कारण चट्टानें रेत में बदल जाती हैं। ऊँचे शिखरों से टकराती लहरों के कारण भारी मात्रा में चट्टानें टूट कर समुद्र में गिर जाती हैं। इसलिए निरन्तर घर्षण तथा जल की क्रिया के कारण, वे छोटे-छोटे कणों में बदल जाती हैं। तब ये समुद्र तट पर रेत बनकर जमा हो जाते हैं।

रेत का रंग उन चट्टानों के रंग पर निर्भर करता है जिनसे ये बनी हैं। हवाई समुद्र तटों पर पाई जानेवाली काली और हरी रेत अपवाद है। यह ज़्वालामुखी के लावा से बनती है जो वास्तव में समुद्र के सम्पर्क में आता है।

अपने भारत को जानो

विज्ञान के क्षेत्र में नाम और ख्याति

१. उस अन्तरिक्ष यान का नाम क्या है जिसमें राकेश शर्मा ने अन्तरिक्ष यात्रा की थी?

२. गंगा भारत की पवित्र नदियों में से एक है। दक्षिण गंगोत्री क्या है?

३. एक विख्यात इंजीनियर, जो राजनेता भी थे, एक सौ वर्ष तक जीवित रहे। वे कौन थे?

४. डॉ.सलीम अली कौन थे? विज्ञान के किस क्षेत्र में उन्होंने कार्य किया?

५. महावीराचार्य कौन थे? उनकी विख्यात कृति का नाम क्या है?

(उत्तर ६६ पृष्ठ पर)

चित्र कैप्शन प्रतियोगिता

MAHANTESH C. MORABAD

क्या तुम कुछ शब्दों में ऐसा चित्र परिचय बना सकते हो, जो एक दूसरे से संबंधित चित्रों के अनुकूल हो?

MAHANTESH C. MORABAD

चित्र परिचय प्रतियोगिता, चन्दामामा,

प्लाट नं. ८२ (पु.न. ९२), डिफेन्स आफिसर्स कालोनी, इकाडुथांगल, चेन्नई - ६०० ०९७.

जो हमारे पास इस माह की २० तारीख तक पहुँच जाए । सर्वश्रेष्ठ चित्र परिचय पर १००/- रुपये का पुरस्कार दिया जाएगा, जिसका प्रकाशन अगले अंक के बाद के अंक में किया जाएगा ।

बधाइयाँ

कृष्णा शर्मा
सेक्टर 4-B,
मकान न.-बी.१२३
शताब्दी नगर
मेरठ, (उत्तर प्रदेश)

विजयी प्रविष्टि

मुन्ना राजा खेल में मस्त
मुन्नी रानी काम में व्यस्त

'अपने भारत को जानो' प्रश्नोत्तरी के उत्तर :

१. सोयूज टी-II
२. भारत का अन्टार्टिका में रिसर्च स्टेशन।
३. सर एम. विश्वेश्वरैया।
४. सुख्यात पक्षी-वैज्ञानिक, उन्होंने भारत में पक्षियों का सर्वांगीण अध्ययन किया।
५. नौवीं शताब्दी का गणितज्ञ। उन्होंने "गणित सार संग्रह" लिखा।

Printed and Published by B. Viswanatha Reddi at B.N.K. Press Pvt. Ltd., Chennai - 26 on behalf of Chandamama India Limited, No. 82, Defence Officers Colony, Ekkatuthangal, Chennai - 600 097. Editor: B. Viswanatha Reddi (Viswam)

BEST GIFT FOR YOUR DEAR AND NEAR ONES

THREE EXCITING BOOKS FROM
TWO RENOWNED WRITERS FOR CHILDREN

MANOJ DAS AND RUSKIN BOND
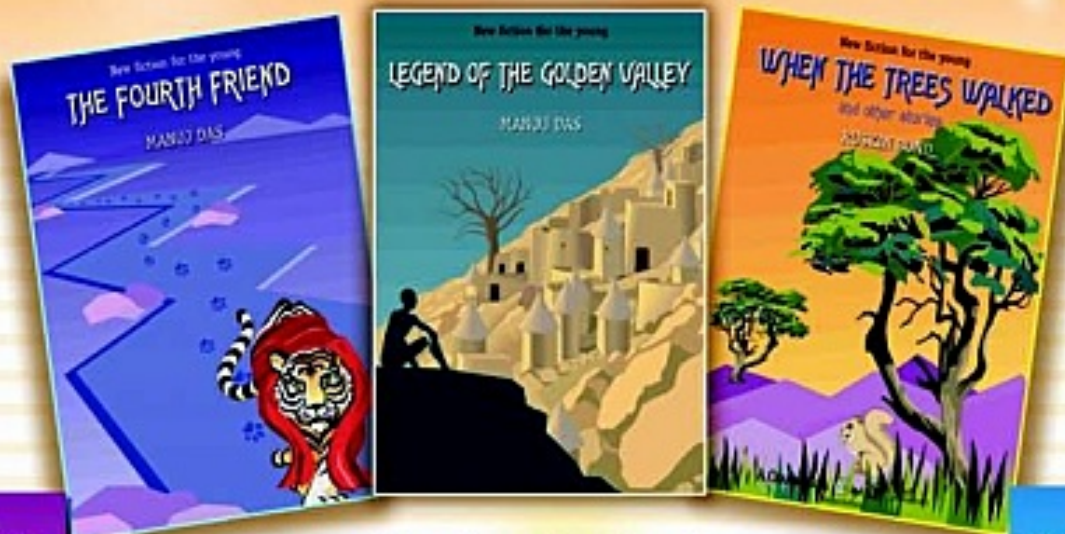
Also four books of
LEGENDS AND PARABLES OF INDIA
from CHANDAMAMA
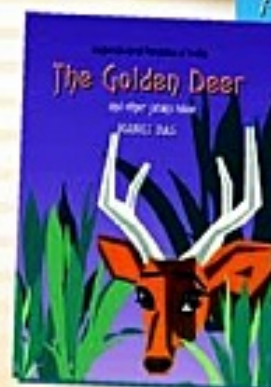
INDIA IS A LAND OF STORIES, RICH IN LEGENDS, PARABLES AND MYTHS

Chandamama has enriched many generations of young minds with these stories. The spiritual subtext and moral lessons in these delightful stories continue to fascinate and mould young Indian minds.

Popular Prakashan has co-published these stories to educate, entertain and inspire the growing generation.

FOR FURTHER ENQUIRIES CONTACT :
CHANDAMAMA INDIA LTD., 82, DEFENCE OFFICERS COLONY,
CHENNAI - 600 097.

CHANDAMAMA (Hindi) MAY 2006
Regd. with Registrar of Newspaper for India No. 1087/57
Regd No. TN/CC(S)Dn/163/06-08
Licensed to post WPP - Inland No.TN/CC(S)Dn/92/06-08, Foreign No. 93/06-08

WOULDN'T YOU LIKE TO MEET THIS MOTELY CROWD?

INDU and CHANDU who are travel bugs, found in Assam one month and Andhra Pradesh in the next.

BHOLA who is confused with everything, whether it is about his family or farm-house.

MINTOO whose mates include rhinos and hippos, otters and frogs.

NAUGHTY BALOO who never misses a chance to get into a scrape.

MUNNA whose world consists of flowers and feline creatures.

ASTRO ARIA who prefers to travel into space.

GOOBA who can be called a wordsmith.

NUTTY who plays with numbers.

And the one and only BHEEM BOY.

Where can we meet them? C'mon quick!

Where else but in Junior Chandamama!

THE ONE-STOP COMPLETE FUN AND ACTIVITY MAGAZINE

NOW AVAILABLE AT YOUR NEAREST NEWS STAND FOR RS.15 PER COPY

For Further Details write to :
CHANDAMAMA INDIA LTD.,
82, Defence Officer's Colony,
Ekkatuthangal, Chennai - 600 097.

PAY ONLY RS.150 FOR ANNUAL SUBSCRIPTION AND SAVE RS.30